(न८वट्ट)

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর



বিশ্বভারতী গ্রন্থালয় ২ বন্ধিম চাটুক্সে স্থীট, কলিকাভা

প্নৰ্প্ৰণ ১৯০১, ১৯১৮, ১৯২১ বিশ্বভারতী প্নৰ্প্ৰণ ১৯০২, ১৯১৯, ১৯৩, প্ৰাবণ ১৯৪৮ আন্দিন ১৯৫০, প্ৰাবণ ১৯৫২, ভাস্থ ১৯৫৫ বৈশাধ ১৯৫৮

WEST BUNGAL CALCUTTA

প্রকাশক শ্রীপুলিনবিহারী সেন বিশ্বভারতী। ৬।৩ হারকানাথ ঠাকুব লেন। কলিকাতা মুদ্রাকর শ্রীপ্রভাতচন্দ্র বায় শ্রীগোরান্ধ প্রেস। ৫ চিম্বামণি দাস লেন। কলিকাতা

এই কাবাগ্রম্থ পরমপ্তাপাদ পিতৃদেবের শ্রীচরণকমলে উংসর্গ করিলাম

चागाढ़ ১৩०৮

সূচীপত্ৰ

অচিম্বা এ ব্রম্বারের লোক-লোকাম্বরে	•	6 1
व्यस्टद्रत मि मन्नम क्लिक इंग्राह्य	•	> 4
व्यक्तात गटर्ड शास्त्र व्यक्त मनीम्ल	•	*
व्यमन क्यन महस्य करनत कारन	•	3 5
অল শ্ইয়া থাকি, ভাই যোৱ	•	≥ 9
खांधार व्यामिट्ड दक्ष्मीत भीन	•	₹ €
चाभारत चाव्छ घन गः नव	•	٤5
चाघाडभःगाड-भारत माड़ाइस चामि	•	€ br
चाकि दम्पास्त नासि वाशि ठत्राष्ट्र	•	98
व्यावात वामात हाटड वीना मान दुनि	•	৩ %
আমরা কোপায় আছি, কোধায় স্বৃত্	•	7 •
व्यामान এ घटत्र व्यालमात्र कटत्र	•	25
ष्याभाव এ मानरगत कानन काडान	•	26
वामात गक्न वाक ट्यामात्र भत्न	•	6-6
यामाद्य रुखन कवि (१ महारुषान	•	54
षाभि ভালোবাসি দেব, এই বাশালার	•	₩8
क सामात्र नदीरतत निताय निताय	•	৩৭
ज्वा मानित आधि, ज्व इर्ड छुडे	•	>>
এ কথা স্বরূপে রাখা কেন গো কঠিন	•	63
এ তুর্ভাগ্য দেশ হতে হে মসলময়	•	(>
क महोत्र कलभानि स्थलाय वार्ष्य ना	•	b ¢
क मुड़ा क्विट इदव, क्रेड स्वक्षान	•	93
এই পশ্চিমের কোণে রক্তরাগরেখা	•	77

এकना এ ভারতের কোন্ বনতলে	•	7 3
এकानारत कृभिने वाकान, कुभि मीफ	•	۶ ج
ज्यत भीनम्क, एकन चाहिम नीत्रत	•	५ २
करूना दुमानभूध चार्छ स्रभ हर्य	•	48
कार्तात कथा तीमा भट्ड यथा	•	36
कारत मृत नाठि कता यङ कित मान	•	8 4
कालि हाएण धितहार्थ गार्न चार्लाहर्न	•	8 9
কোপ। হতে आशियाछि, नाहि भए मदन	•	8 ។
कार्या ना कार्या ना मध्या दर जायज्यामी	•	> 8
करम भ्रान ३८४ चारम नग्रानन क्यां डि	•	8 •
गार्ड नर्भ भाष्टि यान्यना	•	৩২
िष तमया चित्रम्या, डिफ्ट तमया निष	•	७ ७
की बद्ध आधाद ग्र आसम	•	2 9
कौरत्नर भिष्ठपादर भिष्य विकास	•	> • •
छथन करि नि नाथ, कार्ना याद्याकन	•	8 9
खन कार्ड अडे स्थान स्निम निर्देशन	•	220
खन हन दलन आना निर्मा भर्मा भर्मा अ	•	9.3
ख्य भूषा ना व्यानिम मण मिर्य खार्य	•	a 2
তব প্রেমে দক্ত কুমি কবেছ মামাবে	•	2 3
छानि इयु ३८७ निया एन ज्:यज्य	•	bo
काश्रादा (मिश्रायास्त्रन — विच्रहनाइन		७३
তুমি ভবে এখো নাথ, বশো শুভকণে	•	દ્ર
कृभि भारत अलियाइ यङ अनिकात	•	৬৬
कुभि भवाध्य, ज कि अभू भ्राक्षा	•	49
ভোমাৰ अभीटम প্ৰাণমন नाम	•	ર ક
ভোমাব ই कि उशानि पिशि नि यथन	•	e >

ভোমার ক্রায়ের দও প্রভোকের করে	•	ь 5
ख्याद नाज्या रात्र मध्य उत्त	•	3 •
ट्टामात जूतन-याद्य किति मुध्यम	•	8 2
ट्यां विवर्गित औरमनुष	•	\$ 3
ट्डायादन नरमार्थ राना, नुब १८० थिय	•	≥ •
ट्यायार्य म्ला क्रिक्ष क्रिक्र	•	۶,
कारम मारक नक्षित्य निका 'नरदांप	•	59
भीर्षक'ल यम'दृष्ठि, या हि भीराक'ल	•	9
दुर्गम भरपर खार्ष भाष्य कः 'भर्त	•	49
जुलिन धनाएम अल धन प्रक्रिएत	•	≈ ५
(माइ यात यान खार्ग इति १५ कर्त	•	C (r
मा गणि मानर कि ए मानर के डाड	•	bb
मा तुरुष छ भामि तुरुष छ ८५ ५ ५ ५	•	2.2
निकान नग्न-मण्या कालि राज्या	•	8 5
निनीयनग्रान ८ छात दर्भ यान	•	> >
প্रिक ज्ञार्ट द्वि क्यं काल्य	•	18
भारे छेट्न या कि मुद्दार म् ह	•	> €
स्टिनिन यापि ए की रनयापी	•	> >
क्षिति हिन इन भाषा	•	3 3
ला छ १ र र र र म म म हिर्द्धा है। यह स	•	8 2
वामनाइन अर्थ करि मान इह स्रान्स	•	2 • 5
देवदानाम् तर्म मुस्कि, त्म व्यामाद मय	•	8.2
एक करिएड अन्दर ५८ए ९	•	₹ %
मभारक नगद-मात्य भप इत् भर्	•	3 3
मल्वामीसिव द्या भारत्व श्राम	•	4 4
युशदाक, कर्षक प्रक्री निष्ड दृष	•	80

मार्क मार्क कड वात्र छावि कर्यहीन	•	oe.
भारक भारक करू यरव कवनाम जानि	•	7.5
মাত্তেহবিগলিত শুকুকীররণ	•	e 7
मुक करता, मुक करता निमा श्रनः गात्र	•	24
মুত্রাও অঞ্চাত মোর। আদি তার তরে	•	2 • 2
यिन এ व्यामात्र क्रमग्रञ्यात्र	•	> €
गात्रा कार्छ बार्छ छाता कार्छ थाक्	•	২ •
त्म ङिक कामाद्र नद्य रेभर्य नाहि मादन	•	45
শক্তিদন্ত স্বার্থলোড মারীর মতন	•	>••
निक भात्र यां का का दि भी नवश्त्रन	•	2.4
শতाकीत रूर्व याजि तक्तमप-मात्स	•	71
मक्न गर्ग प्रा कित्र भिव	•	> >
गःगात्र गत्व यम (कर्ष गग	•	29
गःगादत्र सादत्र तानिग्राष्ठ एव घटन	•	>>>
त्म উमात প্রকৃত্যের প্রথম অঞ্ন	•	97
সে পরম পরিপূর্ণ প্রভাতের সাগি	•	96
(मर्ड (छा (প্रয়েत गर्व, जिन्द भोवव	•	49
স্বার্থের সমাপি অপঘাতে। অক্সাং	•	95
হে অনন্ত, যেণা তুমি ধাৰণা-অভীত	•	> >
ह्म्य इंडेट्ड म्य. इ निक्रेड्स	•	8 %
हि जारक, उर भिका मिरप्रह य भन	•	200
ছে ভারত, নৃপতিরে শিগায়েছ তুমি	•	> €
रह त्राष्ट्रक्त, তব হাতে काम अयुरीन	•	€ •
ट् राष्ट्रज्ञ, ভाষা-काष्ट्र नड २८७ भाज	•	७२
इं गक्न प्रेयरवंत्र भवम प्रेयद	•	96

(4(-10)

প্রতিদিন আমি হে জীবনস্বামী, দাঁড়াব তোমারি সম্পুথে। করি জ্বোড়কর হে ভ্বনেশর, দাঁড়াব তোমারি সম্পুথে।

> তোমার অপার আকাশের তলে বিজনে বিরলে হে, নম হৃদয়ে নয়নের জলে দাঁড়াব তোমারি সম্মূণে।

তোমার বিচিত্র এ ভবসংসারে কর্মপারাবার-পারে হে, নিখিল-জগত-জনের মাঝারে দাঁড়াব তোমারি সম্মুখে।

> তোমার এ ভবে নোর কাঙ্গ যবে সমাপন হবে হে, ওগো রাজবাজ, একাকী নীরবে দাঁড়াব ভোমারি সম্মুখে।

আমার এ ঘরে আপনার করে
গৃহদীপথানি জ্বালো।
সব তথ্পাক সার্থক হোক
লভিয়া ভোমারি আলো।

কোণে কোণে যত লুকানে। আঁধার মরুক ধতা হয়ে, তোমারি পুণ্য আলোকে বসিয়া প্রিয়ন্ধনে বাসি ভালো। আমার এ ঘরে আপনার করে গৃহদীপথানি ভালো।

পরশমণির প্রদীপ তোমার

সচপল তার জ্যোতি,
সোনা কবে নিক পলকে আমার

সব কলক্ষ কালো।
আমাব এ ঘরে আপনাব কবে
গৃহদীপথানি জালো।

আমি যত দীপ জালি শুধু তার
জালা মাব শুধু কালি—
আমার ঘবের ত্য়াবে শিয়রে
তোমাবি কিবণ ঢালো।
আমার এ ঘরে আপনার করে
গৃহদীপথানি জালো।

9

নিশীপশয়নে ভেবে রাখি মনে
ওগো অন্তর্যামী,
প্রভাতে প্রথম নয়ন মেলিয়া
ভোমারে হেরিব আমি,
ওগো অন্তর্যামী।

জাগিয়া বসিয়া শুল্র আলোকে তোমার চরণে নমিয়া পুলকে মনে ভেবে রাখি, দিনের কর্ম ভোমাবে সঁপিব স্বামী, ভগো অন্তব্যামী।

पिर्नित कर्म माभिएड माभिएड कर्ण कर्ण ज्ञानि मर्न कर्म-अरम् मक्तार्यकाय विभिन्न होमात मर्न।

> मक्तारितनाय ज्ञावि वरम घरत, रञामात्र निनोश-वित्राम-भागरत भ्राप्त ज्ञावना-रामना नीत्रव याहरव नामि, ६रगा व्यस्त्रयामौ।

राष्ट्र क्रिनी कोवनकृष्ट वारक रयन मना वारक रया। राष्ट्र क्रिने क

তব নন্দন-গন্ধ-মোদিভ
ফিরি স্থন্দর ভূবনে
তব পদরেণু মাখি লয়ে তমু
সাজে যেন সদা সাজে গো।
ভোমারি রাগিণী জীবনকুঞ্জে
বাজে যেন সদা বাজে গো।

সব বিদেষ দূরে যায় যেন তব মঙ্গলমন্ত্রে, বিকাশে মাধুরী হৃদয়ে বাহিরে তব সংগীতছন্দে।

> তব নির্মল নীরব হাস্তা হেরি অম্বর ব্যাপিয়া, তব গৌরবে সকল গর্ব লাজে যেন সদা লাজে গো। তোমারি রাগিণী জীবনকৃঞ্জে বাজে যেন সদা বাজে গো।

বদি এ আমার হৃদয়হয়ার
বদ্ধ রহে গো কভূ
দার ভেঙে ভূমি এলো মোর প্রাণে,
ফিরিয়া বেয়ো না, প্রভূ।

यपि कारना पिन এ वीनात जारत जव श्रित्रनाम नाशि यःकारत प्रग्ना करत ज्ञिम क्षराक माज़ारमा, कित्रमा करमा ना, श्रञ्

> जिव जास्तारन यिष कञ् स्थात नाहि एटएक याग्र श्रुश्चित खात वक्करवण्यन काशास्त्रा जामाग्र, कितिग्रा (यर्ग्ना ना, व्यञ् ।

यि किति। पिन छामात्र व्यामतन व्यात्र-काशात्रिध वमारे यण्डल जित्रपिवरमत रश् त्राक्षा व्यामात्र, कितिया (यर्या ना, व्यञ् । সংসার যবে মন কেড়ে লয়
জাগে না যখন প্রাণ
ভখনো হে নাথ প্রণমি ভোমায়
গাহি বসে তব গান।

অন্তর্যামী, কমো সে আমার
শৃন্তমনের রথা উপহার—
পুপ্রিহীন পূজা-আয়োজন,
ভক্তিবিহীন তান,
সংসার যবে মন কেড়ে লয়
জাগে না যথন প্রাণ।

ভাকি তব নাম শুক কঠে, আশা করি প্রাণপণে, নিবিড় প্রেমের সরস বর্ষা যদি নেমে আসে মনে।

সহসা একদা আপনা হইতে
ভরি দিবে তুমি ভোমার অমৃতে
এই ভরসায় করি পদতলে
শৃত্য হৃদয় দান,
সংসার যবে মন কেড়ে লয়
ভাগে না যথন প্রাণ।

জীবনে আমার যত আনন্দ পেয়েছি দিবসরাত সবার মাঝারে ভোমারে আজিকে শ্ববির, জীবননাথ।

যে দিন ভোমার জগং নির্দি হর্মে পরান উঠেছে পুলকি সে দিন আমার নয়নে হয়েছে ভোমারি নয়নপাত। সব আনন্দ-মাঝারে ভোমারে শ্বরিব, জীবননাথ।

> বার বার তুমি আপনার হাতে স্বাদে গদ্ধে ও গানে বাহির হইতে পরশ করেছ অন্তর-মাঝ্রানে।

পিতা মাতা ভাতা প্রিয়পরিবার,
মিত্র আমার, পুত্র আমার,
সকলের সাথে জদয়ে প্রবেশি
তুমি আছ মোর সাথ।
সব আনন্দ-মাঝারে তোমারে
স্মরিব, জীবননাথ।

কাব্যের কথা বাঁধা পড়ে যথা ছন্দের বাঁধনে পরানে তোমায় ধরিয়া রাখিব সেইমতো সাধনে।

> কাঁপায়ে আমার হৃদয়ের সীমা বাজিবে তোমার অসীম মহিমা, চিরবিচিত্র আনন্দরূপে ধরা দিবে জীবনে, কাব্যের কথা বাঁধা পড়ে যথা ছন্দের বাঁধনে।

আমার ভুক্ত দিনের করে ভূমি দিবে গরিমা, আমার ভয়র অণুতে অণুতে রবে তব প্রতিমা।

> সকল প্রেমেন স্নেহের মাঝারে আসন সঁপিব হৃদয়রাজারে, অসীম তোমার ভূবনে রহিয়া রবে মম ভবনে, কাব্যের কথা বাঁধা রহে যথা ছন্দের বাঁধনে।

ना वृत्व धामि वृत्व हि जामार के त्वमत्न कि इ ना खानि। व्यर्थ अपने भारे ना, उप् व वृत्व हि जामात्र वाना। वृत्व हि जामात्र वाना।

निषातम भात्र नित्यत्वत्र भारक रुक्ता-त्वमना-जावना-आघारक रुक्त त्मग्र मर्व भर्तीरत्र ७ मरन ज्व मर्वाम आनि।

> ना तुरमञ वाभि तुरमि जिल्लास रकमरन किछू ना खानि।

তব রাজ্ব লোক হতে লোকে, সে বারতা আমি পেয়েছি পলকে হাদি-মাঝে যবে হেনেছি তোমার বিশ্বের রাজধানী। না বুঝেও আমি বুঝেছি ভোমারে কেমনে কিছু না জানি।

আপনার চিতে নিবিড় নিভতে
যেথায় তোমারে পেয়েছি জানিতে
সেথায় সকলি স্থির নির্বাক্
ভাষা পরাস্ত মানি।
না বৃশেও আমি বৃশেছি ভোমারে
কেমনে কিছু না জানি।

যারা কাছে আছে তারা কাছে থাক্, তারা তো পাবে না জানিতে তাহাদের চেয়ে তুমি কাছে আছ আমার হৃদয়থানিতে।

যারা কথা বলে তাহারা বলুক,
আমি কাহারেও করি না বিমুখ,
তারা নাহি জানে— ভরা আছে প্রাণ
তব অকথিত বাণীতে।
নীরবে নিয়ত রয়েছ আমার
নীরব হৃদয়খানিতে।

তোমার লাগিয়া কারেও হে প্রভু, পথ ছেড়ে দিতে বলিব না কভু, যত প্রেম আছে সব প্রেম মোরে ভোমা-পানে রবে টানিতে। সকলের প্রেমে রবে তব প্রেম আমার হৃদয়খানিতে।

> সবার সহিতে তোমার বাঁধন হেরি যেন সদা এ মোর সাধন, সবার সঙ্গে পারে যেন মনে তব আরাধনা আনিতে। সবাব মিলনে তোমার মিলন জাগিবে হৃদয়খানিতে।

আঁধারে আর্ভ ঘন সংশয় বিশ করিছে গ্রাস, ভারি মাঝ্ধানে সংশয়াভীভ প্রভায় করে বাস।

বাকোর ঝড়, ভর্কের গুলি, অন্ধ বৃদ্ধি ফিরিছে আকুলি, প্রভায় আছে আপনার মাঝে— নাহি ভার কোনো আস।

সংসারপথে শত সংকট

ঘূরিছে ঘূর্ণায়ে,
ভারি মাঝ্থানে অচলা শাস্থি
অমরতক্ষতায়ে।

निन्मा ७ कि छि, मुड़ा नित्र ह, कड निषवान डेएड अड़त्र — चित्र यागामत्म छित्र-आनम्म, डाङात्र माहित्का नाम। ভামল কমল সহজে জলের কোলে আনন্দে রহে ফুটিয়া; ফিবিতে না হয় 'আলয় কোথায়' ব'লে ধূলায় ধুলায় লুটিয়া।

> তেমনি সহজে আনন্দে হ্বষিত তোমাব মাঝাবে রব নিমগ্রচিত, পুজাশতদল আপনি সে বিকশিত সব সংশয় টুটিয়া।

কোথা আছ তুমি পথ না খুঁ জিব ক ছু, শুধান না কোনো পথিকে। ভোমানি মাঝাবে প্রমিব ফিনিব প্রভূ, যখন ফিনিব যে দিকে।

> চলিব যখন ভোমাব সাকাশগৈহে তব আন-দ-প্রবাহ লাগিবে দেহে, ভোমাব প্রম স্থাব মতন স্নেহে বংক সাসিবে ছুটিয়া।

मकल गर हर कित हिन.

डामान गर छाछिन ना।

मनाद छानिया किति, य हिन भार डर भन्दर्वेगा।

ত্ব আহ্বান আসিবে যখন
সেকথা কেমনে কবিব গোপন।
সকল বাকো সকল করে
প্রকাশিবে তব খাবাধনা।
সকল গব দূব কবি দিব,
গোমাব গব ভাডিব না।

य । या व्याचि (भाराष्ट्रि) य कार्ष्ट्र भ भिने भक्ति यादि भृदे । स्पृ १व भाने (भारा भारा भारा वाष्ट्रिया हैतिया এक श्रांत ।

পথেব পথিক সেও দেখে যাবে তোমার বাবতা মোব মুখভাবে ভবসংসার-বাতায়ন হলে বসে রব যবে অনমনা। সকল গর্ব ক্রি দিব, ভোমার গ্র্ব ভাড়িব না। ভোমার অসীমে প্রাণমন লয়ে

যত দূবে আমি যাই
কাথাও ছঃখ, কোথাও মৃত্যু,
কোথা বিচ্ছেদ নাই।

गुड़ा भि भरत गुड़ात कल, पूक्ष भि इस प्रश्वत क्ल, टिश्मा इर्ड यरन खड्छ इस्स जालनात लारन होई।

হে পূর্ণ, তব চবণেব কাছে
যাহা কিছু সব আছে আছে আছে—
নাই নাই ভয়, সে শুধু আমাবি,
নিশিদিন কাঁদি তাই।

অক্নয়ানি সংসাবভাব পলক কেলিতে কোথা একাকার ভোমান সকল জীবনের মাঝে বাথিবাবে যদি পাই। আধাৰ আসিতে রজনীৰ দীপ জেলেছিয় যতগুলি— নিবাও বে মন, আজি সে নিবাও সকল তুয়াৰ পুলি।

আজি মোব ঘরে জানি না কখন প্রভাত করেছে ববিব কিরণ, মাটিব প্রদীপে নাই প্রযোজন, ধূলায় হোক সে দুলি। নিবাও রে মন, রজনীব দীপ সকল তুয়াব খুলি।

> বাথো রাখো আজ তুলিয়ো না ধুর জিল বাণার হাবে। নারবে বে মন, দাভাত আসিয়া আপন বাহিব-দারে।

শুন আজি প্রতে সকল আকাশ সকল আলোক সকল বাতাস তোমার হইয়া গাহে সংগাঁত বিরাট কঠ হুলা। নিবাও নিবাও রক্ষনার দীপ সকল তুয়ার পুলা। ভক্ত কৰিছে প্ৰভ্ৰ চৰণে জীবন সমৰ্পণ— ভবে দীন, গৃই জোডকৰ কৰি কৰ্ ভাষা দৰশন।

भिलारमन भाना পि ७८. ९८७ सनि, निरुषा १४८. ९८७ अग्र छल्छना, पृष्टल भाषाि निरिष्धा लिट्छ। त उटा सिम-निर्धम। प्रक्रिक किन्द्रण পि ५न ५नर्ग ज्योनन भग्नेग।

> ७३ .य आरलाक भर्डरू जाञान छेमान लालाडेर्म्स, अथा ३१० शनि अकिं निश्चा अध्नक आथाय ९१म।

চাবি বিকে পোৰ শাধিসাগ্ৰ স্থিব হয়ে আছে ভবি চবাচৰ, ক্ষণকাল- হবে দাঁড়াও বে ভারে, শাস্ত কবো বে মন। ভাক্ত কবিছে প্রভ্ব চবণে জীবন সমপ্র। सह महेगा शक्ति छाडे जात याद। याप छाडा याप। क्वाड़ेक् यनि द्वाताय छ। महाय व्याव द्वात द्वार-द्वाय।

নদীত উসম কেবলি র্থাই
প্রাহ আঁকে জি বাখিবারে চাই,

একে একে বুকে আগাত কবিয়া

(উইগুলি কেপা ধায়।

অল্লেইয়া পাকি শাই মান

যাহা মায় হাহা যায়।

याका याय व्यन याका निकृष्णान भन यकि निके मेलिया . श्रामान कृत माकि क्षय, भनि .क्ष्मा न्य कृत महा महिमाय।

ভোষাতে র্যেতে কত শশী ভাগ,
কভু না তাবায় অণু প্ৰথণ,
আমাৰ কৃদ্ৰ তাবাধনগুলি
ব্বে না কি তেব পায়।
অলু লইয়া থাকি তেতি মোৰ
যাতা যায় ভোতা যায়।

36

भागात यात्र मुड़ात मृड यामात यात्रत घात्त, उन याद्याम कित मिन्दम भाग द्राय अस भारत।

আজি এ বজনা তিমিব-আধাৰ,
ভিষভাৱা হুব কদেয় আমাৰ,
তেৰু দাঁপি হাতে থুকা দিয়া দাব
নিম্যা কইব তাবে।
পাচাইলৈ আজি মৃত্যুৰ দুভ

প্জিন ভংহারে জোডকন কবি নাকেল ন্যন্ত্রেল, প্জিন ভাহারে প্রানেন ধন স্পিয়া চরগ্রুল।

আদেশ পালন কৰিয়া ভোমাৰি

যাৰে সে আমাৰ প্ৰভাত আধাৰি,
শ্বা ভবনে ৰসি তৰ পায়ে

অপিৰ আপনাৰে।

পাঠাইলৈ আজি মৃত্যৰ দূত

আমাৰ ঘৰেৰ দ্বাহৰ।

প্রতিদিন ভব গাধা গাব আমি সুমধ্র— ভূমি মাবে দাও কবা ভূমি মাবে দাও কবা

> क्षियि थिन भाक भारत रिक्ठ क्षेत्रामान, कृषियो न क्र लाग क्र . स्राप्त भावण्य ---स्र . स्राप्त भावण्य ---स्र क्रिय क्र आंधा

ज्ञियान आमान भारत थानि, ज्ञामान भम्दा थानि, ज्ञाम यभि नदन भन्न द्रामान देनान देशि,

> জুমি যদি তুখ- পিৰে রাখ হাও প্রেছিল, জুমি যদি পুখ হতে দেশু কৰছ দূব—— প্রিদিন তিব গাগা গাব আমি সুমধুর।

ভোমার পতাকা যারে দাও তারে বহিবারে দাও শক্তি। ভোমার সেবার মহং প্রয়াস সহিবারে দাও ভক্তি।

আমি তাই চাই ভরিয়া পরান
তঃখেরি সাথে তঃখের ত্রাণ,
তোমার হাতের বেদনার দান
এড়ায়ে চাহি না মুক্তি
ত্থ হবে মোর মাথাব মানিক
সাথে যদি দাও ভক্তি।

যত দিতে চাও কাজ দিয়ো যদি তোমারে না দাও ভুলিতে— অন্তর যদি জড়াতে না দাও জালজঞ্চালগুলিতে।

বাঁধিয়ো আমায় যত খুশি ভোরে,
মুক্ত রাখিয়ে৷ তোমা-পানে মোরে,
ধুলায় বাখিয়াে পবিত্র ক'বে
ভোমার চবণন্লিতে।
ভূলায়ে বাখিয়াে সংসারতলে,
ভোমারে দিয়াে না ভূলিতে।

যে পথে ঘুরিতে দিয়েছ ঘুরিব, যাই যেন তব চরণে। সব শ্রম যেন বহি লয় মোরে সকল-শ্রাস্থি-হরণে।

তুর্গমপথ এ ভবগহন,
কত তাগি শোক বিবহদহন,
জীবনে মধণ করিয়া বহন
প্রাণ পাই যেন মধণে।
সন্ধাবেলায় লভি গো কুলায়
নিধিলশরণ চরণে।

ঘাটে বসে আছি আনমনা,

যেতেছে বহিয়া স্থসময়।

এ বাহাসে ভরী ভাসাব না

ভোমা-পানে যদি নাহি বয়।

দিন যায় ওগো দিন যায়,

দিনমণি যায় অস্তে।

নাহি হেরি বাট, দ্রভারে মাঠ

প্সর গোধৃলি-ধৃলি-ময়।

ঘরের ঠিকানা হল না গো,
মন করে তব্ যাই-যাই।
ক্রবভারা তুমি যেথা জাগ'
সে দিকের পথ চিনি নাই।
এত দিন তবা বাহিলাম,
বাহিলাম তবা যে পথে,
শতবার তরী তুর্তৃর্ কবি
সে পথে ভরসা নাহি পাই।

তীর-সাথে হেবো শত ডোরে
বাঁধা আছে মোর তবীখান।
রশি খুলে দেবে কবে মোরে—
ভাসিতে পারিলে বাঁচে প্রাণ।
কোথা বুকজোড়া খোলা হাওয়া,
সাগরের খোলা হাওয়া কই।
কোথা মহাগান ভরি দিবে কান,
কোথা সাগরের মহাগান।

समारक नगर-सारक পथ इटड পर्ष कर्मवर्ण था यद डेक्किट जार्ड मड माथा-প्रमाथाय— नगर्दत नाड़ी डेट्ट कोड ७५ इट्य, नाट्ट म भाषाड़ि भाषानिक्छित 'भट्ट- डोमिक भाकृणि थाय भाष, इट्टे दथ, डेटड एक मृलि -

ভখন সহসা হেবি মৃদিয়া নয়ন
মহাজ্বারণা-মাঝে অন্থ নিজন
ভোমার আসনগানি — কোলাহল-মাঝে
ভোমার নিংশক সভা নিস্তরে বিরাজে।
সব ছাখে, সব স্থাপ, সব ঘরে ঘরে,
সব চিত্তে সব চিতা সব চেষ্টা-'পরে
যত দূর দৃষ্টি যায় শুণু যায় দেশা
তে সঙ্গবিহীন দেব, ভূমি বসি একা।

व्याक्षि द्रमायुत भाष्टि वाायु हवाहरत्।

জনশৃত্য ক্ষেত্র-মাঝে দীপু দ্বিপ্রহরে
শক্ষান গতিহীন স্কানতা উদার
রয়েছে পড়িয়া প্রাস্ত দিগস্থপ্রসাব
বর্ণগ্রাম ভানা মেলি। ক্ষাণ নদীবেথা
নাহি করে গান আজি, নাহি লেখে লেখা
বাল্কাব ভটে। দূরে দূবে পল্লী যভ
মুজ্তিনয়নে রৌদ্র পোহাইতে বত
নিদ্রায় জলস ক্লাস্ত।

এই স্থানতার
ভানতেতি তৃণে তৃণে ধুলায় ধুলায
মোৰ অঙ্গে বোমে ৰোমে, লোকে লোকান্তরে
প্রহে সূর্যে তারকায় নিতাকাল ধ'বে
অনুপ্ৰমাণুদ্ৰে নৃত্যকলবোল—
ভোমাৰ সামন যেরি সন্ত কল্লোল।

मार्क मार्क कड वाज छावि, कर्मशैन धाक नहें इन रदना, नहें इन किन।

> महे हर माहे প्रज्ञ. (म-मकल क्षा.)
>
> जालिम शाम्ब ह्मि कर्त्र शहर स्ता ज्ञारामी ज्या ज्ञार ज्ञार तालाम প्रक्रम वश्चिक्ष क्षातार वाद्याव ज्ञाह्यकाल हाल्छ क्षातार्थ. प्रकृति श्राप्त वेदली मिर्फ वाद्यार प्रकृति श्राप्त वेदली मिर्फ वाद्यार प्रकृति कर्त्य क्षण नाम समस्त. वेद्या लिखा क्षित्र कर्म नाम समस्त. वेद्या लिखामगाव लिखा मार्किट म्बिशा रस्त्वित्र, भन कर्म विश्व लिखा।

> > প্রভাতে জাগিয়া উঠি মেলিও নয়ন; দেখিয়া ভরিয়া আতে আমার কানন।

আবার আমার হাতে বীণা দাও তুলি, আবার আমুক ফিরে হারা গানগুলি।

সহসা কঠিন শীতে মানসের জলে
পদ্মবন মরে যায়, হংস দলে দলে
সারি বেঁধে উড়ে যায় স্থান্ন দক্ষিণে
জনহান কাশফুল্ল নদীর পুলিনে;
আবার বসত্তে তারা ফিরে আসে যথা
বহি লয়ে আনন্দের কলম্থরতা—

তেমনি আমার যত উদ্ভে-যাওয়া গান আবার আম্ব ফিরে মৌন এ পরান ভরি উতরোলে; তারা শুনাক এবাব সমুদ্রতীরের তান, অজ্ঞাত রাজার অগম্য রাজ্যের যত অপরূপ কথা, সীমাশৃষ্য নির্জনের অপূর্ব বারতা। এ আমার শরীরের শিবায় শিরায়
যে প্রাণ্ডরক্ষমালা বাত্রিদিন ধায়
সেই প্রাণ চুটিয়াছে বিশ্বদিছিলয়ে,
সেই প্রাণ অপরূপ ছলে গালে লয়ে
নাচিচে ভ্রনে— সেই প্রাণ চুপে
বস্ধার মৃত্তিকার প্রতি রোমকৃপে
লক্ষ লক্ষ ভূণে ভূণে স্কারে হরুষে,
বিশ্বদাপী জন্মমূল-সমূদ্র-দোলায়
ছলিতেতে অভূতীন জোয়ার-ভাটায়।
করিতেতি অগ্ভর, সে অন্যু প্রাণ
অক্ষে অক্ষে আমারে করেছে মহীয়ান।

भित्रे युगगुगार्यत वितारे स्लान्न स्थानात नाष्ट्रीर सामिक करिएक नर्डन। দেহে তাব মনে প্রাণে হয়ে একাকার এ কী অপকপ লীলা এ অঙ্গে আমার।

> এ কী জ্যোতি, এ কী ব্যোম দীপ্তদীপ-জ্বালা দিবা আর রজনীর চিরনাট্যশালা। এ কী শ্যাম বম্বন্ধরা, সমুদ্রে চঞ্চল, পর্বতে কঠিন, তরু-পল্লবে কোমল, অবণ্যে আধাব। এ কী বিচিত্র বিশাল অবিশ্রাম রচিতেছে সজনের জ্বাল আমার ইন্দ্রিয়যন্ত্রে ইন্দ্রজালবং। প্রত্যেক প্রাণীব মাঝে প্রকাণ্ড জগং।

> > ভোমাবি মিলনশ্যা।, হে মোব বাজন,
> > কুদ্র এ সামাব মাঝে অনম্ভ সাসন
> > অসীম বিচিত্রকান্ত। ওগো বিশ্বভূপ,
> > দেহে মনে প্রাণে সামি এ কী সপ্রপ।

कृति उदय धरमा नाथ, रामा छ७कान प्राप्त भरन गांथा धरे महाभिष्ठामान।

> भाग छ नगरन वालि এই नौनाश्रत कारना नृश विधिया ना आद कारता १८०, आमात भागरत रेनरन काश्रद कानरन, आमात कार्य १९८४, भक्टरन निकान।

्छाश्याख्य निर्मोद्धन निर्मात शहरन यानत्म निर्माद्ध शंथा छाणात्मान-ंभरन निर्मा कृषि मायथादन। माथिनम छाछ यामान याद्धन छत्म, डाइस्ट नुमाछ मक्ष युष्टित 'भरन, त्राभोत त्याप मनुत मक्षाकरभ कृषि এमा निर्मा

> भक्ष भ भावतरक वक्षमित्राम रहामात्र महाम मृङ्घि धाक् द्राधिमिन।

ক্রমে শ্লান হয়ে আসে নয়নের জ্যোতি
নয়নতারায়; বিপুলা এ বস্থমতী
ধীরে মিলাইয়া আসে ছায়ার মতন
লয়ে তার সিন্ধু শৈল কান্তার কানন;
বিচিত্র এ বিশ্বগান কীণ হয়ে বাজে
ইন্দ্রিয়বীণার স্ক্র শততন্ত্রী-মাঝে;
বর্ণে বর্ণে সুরঞ্জিত বিশ্বচিত্রখানি
ধীরে ধীরে মৃত্ হস্তে লও তুমি টানি
সর্বাঙ্গ হৃদয় হতে; দীপ্ত দীপাবলী
ইন্দ্রিয়ের দ্বারে দ্বারে ছিল যা উজ্জ্বলি
দাও নিবাইয়া; তার পরে অর্ধরাতে
যে নির্মল মৃত্যুশযা। পাত নিজ্হাতে—

সে বিশ্বভ্রনহীন নিঃশঙ্গ আসনে একা তুমি বসো আসি প্রম নির্জনে।

देवब्रागामाध्यम मुङ्गि, स्म व्यामात नय।

অসংখ্য বন্ধন-মাঝে মহানন্দময়
লভিব মুক্তির স্থাদ। এই বস্থার
মৃত্তিকার পাত্রখানি ভরি বারস্থার
ভোমার অমৃত ঢালি দিবে অবিরত
নানা-বর্ণ-গন্ধ-ময়। প্রদীপেব মতে।
সমস্ত সংসার মোর লক্ষ বভিকায়
ভালায়ে তুলিবে আলো ভোমারি শিখায়
ভোমার মন্দির-মাঝে।

ইন্দ্রিয়ের দ্বার কদ্ধ করি যোগাসন, সে নতে আমার। যে-কিছু আনন্দ আছে দুশ্রে গদ্ধে গানে ভোমার আনন্দ রবে ভার মাঝ্যানে।

> भाग भाग मुख्यित जितित खिलिया, भाग भाग ভिक्तित प्रतित किया।

তোমার ভুবন-মাঝে ফিরি মৃথসম তে বিশ্বমোহন নাথ। চক্ষে লাগে মম প্রশান্ত আনন্দঘন অনন্ত আকাশ; শবংমধ্যাহে পূর্ণ স্থবর্ণ-উচ্ছাস আমাব শিরার মাঝে করিয়া প্রবেশ মিশায় রক্তের সাথে আতপ্ত আবেশ।

> ভুলায় আমারে সবে। বিচিত্র ভাষায় ভোমার সংসাব মােবে কাঁদায় হাসায়; তব নবনারী সবে দিখিদিকে মােবে টোনে নিয়ে যায় কত বেদনাব ভারে, বাসনাব টানে। সেই মাের মুগ্ধ মন বাণাসম তব অক্ষে কবিয় অপণ— ভাব শত মােহতক্ষে কবিয়া আঘাত বিচিত্র সংগীত তব জাগাও তে নাথ।

নির্জন শয়ন-মাঝে কালি রাত্রিবেলা ভাবিতেছিলাম আমি বসিয়া একেলা গভজীবনের কত কথা, তেন কণে শুনিলাম, তুমি কহিতেছ মোব মনে —

> 'ওবে মতা, ওবে মুগ্ধ, ওবে অং হং ভালা। রেখেছিলি আপনার সব হাব ,খালা— চঞ্চল এ সংসারেব যত ছায়ালোক, যত ভুলা, যত ধলা, যত ছংখলোক, যত ভালোমন্দ, যত গাঁতগ্র্ধ লয়ে বিশ্ব পশেছিল , এব অবাধ আল্যে। সেই সাথে ভোর মৃক্ত বাভায়নে আমি অজ্ঞাতে অসংখা বার এসেছিও নামি।

> > स्नात कि भि अभि शिम यामि भाग नाम कान পथ भिर्म १ टार्न ६८६ भि भि छाम।

তথন কৰি নি নাথ, কোনো আয়োজন;
বিশ্বের সবার সাথে তে বিশ্ববাজন,
অজ্ঞাতে আসিতে হাসি আমাৰ অন্তবে
ক ৩ শুভদিনে, ক ৩ মুহুর্তেব পৈবে
অসামেৰ ডিচ্চ লিখে গেছ। লই তুলি
গোমার স্বাক্ষৰ-আনা সেই ক্ষণগুলি—
দেখি ভাবা স্বৃতি-মান্যে আছিল ছড়ায়ে
ক ৩-মা ধলিৰ সাথে, আছিল জড়ায়ে
ক গিকেৰ ক ৩ ১০ছ স্বুৰ্ত্বেখ থিৱে।

তে নাথ, অবজ্ঞা কৰি যাও নাই ফিবে আমাৰ সে ধুলাওপ খেলাঘৰ দেখে; খেলা-মাৰে শুনিতে পেযেতি থেকে থেকে যে চৰণধ্বনি, আজ শুনি তাই বাজে জগং-সংগীত-সাথে চন্দ্ৰ্য-মাৰে। কাবে দূব নাজি কব। যত কবি দান
ভোমাবে জন্ম মম ৩৩ হয় স্থান
সবাবে জাইতে প্রাণে। বিদেষ যেখানে
হাব হতে কাবেও ভোডায় অপামানে
হুমি সেই-সাপে যাও, যেগা অহ কাব
হণাভবে ফুলজানে বাভ কবে হাব
সাপা হতে ফিব হুমি, ইংমা চি ওকোণে
বিসি বিসি ভিল্ল কবে এমাবি আসানে
ভপ্ল শুলো। হুমি পাক যেপায় সবাহ
সহজে খুঁ ভিয়া পায় নিজ নিজ গৈই।

কুদ্র বাজা আসে যবে ভূগা উচ্চবরে তাকি কতে, 'সরে যাও, দুবে যাও সবে।' মহাবাজ, ভূমি যবে এস সেই-সাথে নিখিল জগং আসে গোমাবি পশ্চাতে। कानि शास्त्र পরিহাসে গানে আলোচনে অর্বরাত্রি কেটে গেল বন্ধুজন-সনে; আনন্দের নিম্বাহারা আন্তি বহে লয়ে ফিরি আসিলাম যবে নিভ্ত আলয়ে দাঁডাইয় আধার অঙ্গনে। শীতবায় বুলালো মেহেন হস্ত তপু ক্রান্ত গায় মুহুর্তে চঞ্চল বক্তে শান্তি আনি দিয়া।

> মৃহতেই মৌন হল স্তক্ষ হল হিয়া নিধাণপ্রদাপ বিক্ত নাট্যশালা সম। চাহিয়া দেখিয়ু উপ্ব-পানে: চিত্ত মম মহতেই পাব হয়ে অসীম রজনী দাঁ চালো নক্ষত্রলোকে।

> > হেবিন্তু তথান— থেলিতেছিলাম মোবা অকু হিত মনে তবঁ স্তব্ধ প্রাসাদেব অনন্ত প্রাস্তবে।

কোপা হতে আসিয়াছি, নাহি পড়ে মনে, অগণা যাত্রীর সাথে ভীর্ধদরশনে এই বস্তুদ্ধরাতলে, লাগিয়াছে ত্রী নীলাকাশসমূদের ঘাটের উপরি।

> खना याय छाति निर्क नितमत्क्रमा ताक्किट्डफ (तताउँ म भातनक्षित्वि लक्ष लक्ष छोत्मक्ष्कार्त्त । এ॰ द्वला याडी मत्मका-भ द्व क्रिया ७ द्रमा भृती প्राटक भावनाला-भित्त । सादम भारम क्रमाडू छ्ट्य इल श्रद्ध श्रामिशारम ।

> > এখন মন্দিরে তব এসেছি তে নাপ, নিজনে চৰণ হলে কবি প্রনিপাত এ জ্ঞান পূজা সমাপিব। তার পর নবতার্পে যেতে তবে তে বস্তুর্ধশ্ব।

মহারাজ, ফণেক দর্শন দিতে হবে
তথানার নির্কান ধামে। সেথা ডেকে লবে
সমস্ত মালোক হতে ভোমার মালোতে
আমারে একাকী -- সর স্তথ্য হতে,
সর সঙ্গ হতে, সমস্ত এ রম্ভরার
কর্মরিক্ষ হতে। দের, মন্দিরে ভোমার
প্রিয়াতি পুথিবীর সর্ব যাত্রী-সন্দ দ্বার মৃক্ত ভিল যবে আর্ভির ফণে।

> मीलावली निवादेश हरण गारत गरत नामा लरण माना घरत लुखरकता मरत, द्यात कन्न द्राय गारत, नास्य अन्नकात वामारत भिलास्य जित्र हदरण ভामाव।

> > একথানি জীবনেব প্রদীপ তুলিয়া তোমাবে হেবিব একা ভুবন ভুলিয়া।

প্রভাতে যথন শন্ধ উঠেছিল বাঞি ভোমাব প্রাঞ্চন গলে, ভবি লয়ে সাঞ্চি চলেছিল নবনাবী গ্রেয়াগিয়া ঘর নবীন শিশিরসিক্ত গুঞ্জনমূখব বিষয় বনপথ দিয়ে। আমি অক্সমনে সঘনপল্লবপুঞ্জ ছায়াকুঞ্জবনে ছিন্ন শুয়ে গুণান্তীর্ণ তবঙ্গিনী শৈরে। বিহক্তের কলগীতে স্তমন্দ সমারে।

আমি যাই নাই দেব, শোমাব পূজায়।
চয়ে দেখি নাই পথে কারা চলে যায়।
আজ ভাবি, ভালো হয়েছিল মোর ভুল,
তথন কুমুমগুলি আছিল মুকুল—

হেবো, তাবা সাবা দিনে ফুটিতেতে আজি। অপরাত্রে তবিলাম এ পুজাব সাজি।

(र त्राष्ट्रम्, उव राउ काल अस्टीन।

গণনা কেহ না করে, রাত্রি আর দিন
আসে যায়, ফুটে ঝরে যুগযুগান্তরা।
বিলম্ব নাহিকো তব, নাহি তব হরা—
প্রতীক্ষা করিতে জান। শত বর্ষ ধ'রে
একটি পুম্পের কলি ফুটাবার তরে
চলে তব ধার আয়োজন। কাল নাই
আমাদের হাতে; কাড়াকাড়ি করে তাই
সবে মিলে, দেনি কানো নাহি সহে কভু।

মাগে তাই সকলের সব সেবা প্রভু, শেষ করে দিতে দিতে কেটে যায় কাল— শৃত্য পড়ে থাকে হায় তব পূজাথাল।

> অসময়ে ছুটে আসি, মনে বাসি ভয়— এসে দেখি, যায় নাই তোমার সময়।

एडामात देकिङ्शानि पिधि नि यथन ध्लिम्षि ছिल डात्त्र कतिया (गाभन।

> যথনি দেখেছি আঞ্চ তথনি পুলকে
> নির্ধি ভ্বনময় সাঁধারে আলোকে
> অলে সে ইক্সিড; লাধে লাধে ফুলে ফুলে
> ফুটে সে ইক্সিড; সমুদ্রের কুলে কুলে
> ধরিত্রীর তটে তটে চিহ্ন আঁকি ধায়
> ফেনাক্সিড তরক্সের চুডায় চুড়ায়
> ফ্রেড সে ইক্সিড; শুভ্রীধ তিমাদ্রির
> শুক্সে শুক্সে উধ্ব মুখে জাগি বহে ভির শুক্সে সে ইক্সিড।

> > ভিখন ভোমান পানে বিমুখ হইয়া ছিমু কী লয়ে কে জানে।

> > > विभरोड मृत्य ভारत পर एछिछ, डाइ विশरकाए। मि मिश्रित वार्थ नृश्वि नाई।

তব পূজা না আনিলে দণ্ড দিবে তারে, যমদূত লয়ে যাবে নরকের দ্বারে, ভক্তিহীনে এই বলি যে দেখায় ভয় তোমার নিন্দুক সে যে, ভক্ত কভু নয়।

হে বিশ্বভ্বনরাজ, এ বিশ্বভ্বনে
আপনারে সব চেয়ে রেখেছ গোপনে
আপন মহিমা-মাঝে। তোমার সৃষ্টির
কুদ্র বালুকণাটুকু, ক্ষণিক শিশির,
তারাও তোমার চেয়ে প্রত্যক্ষ আকারে
দিকে দিকে ঘোষণা করিছে আপনারে।

যা-কিছু তোমারি তাই আপনার বলি চিরদিন এ সংসার চলিয়াছে ছলি— তবু সে চোরের চৌর্য পড়ে না তো ধরা।

व्यापनात्त्र कानाहर् नाहे उव बता।

সেই তো প্রেমের গর্ব, ভক্তির গৌরব। সে তব অগমক্তম অনম্ব নীরব নিস্তম নির্জন-মাধ্যে যায় অভিসারে পূজার স্থবর্ণথালি ভরি উপহারে।

> তুমি চাও নাই পূজা, সে চাতে পুঞ্জিতে; একটি প্রদীপ হাতে রহে সে খুঁ জিতে অস্তুরের অস্তুরালে। দেখে সে চাহিয়া, একাকী বসিয়া আছ ভরি ভার হিয়া।

চমিক নিবায়ে দীপ দেখে দে তখন, ভোমারে ধরিতে নারে অনস্থ গগন। চিরজীবনের পূজা চরণের তলে সমর্পণ করি দেয় নয়নের জলে।

> विना ञारमत्मत्र शृक्षा, एक शांभनहात्री, विना ञास्वारनत्र श्रीक, त्मरे गर्न जाति।

কত-না তুলাবপুঞ্জ আছে স্থপ্ত হয়ে অহতেনা তিমাদ্রিব স্তব্ব আলায়ে পালাগপ্রাচাব-মাঝে। হে সিন্ধু মহান, তুমি তো তাদেব কাবে কব না আহ্বান অপেন অতল হতে। আপনাব মাঝে আতে তাবা অবক্ষা, কানে নাতি বাজে বিশ্বেব স্থাতি।

প্রভাতের বৌদকরে
যে গ্যার বয়ে যায়, নদা জয়ে করে,
বন্ধ টুটি ছুটি চলে-- কে সিদ্ধ মহান,
সেও গো শানে নি কল ভোমার সাহ্বান।
সে স্থার গলোরীর শিখবচূড়ায
গোমার গল্পীর গান কে শুনিতে পায়।

আপন প্রোতেব বেগে কী গভীব টানে গোমাবে সে খুঁজে পায় সেই তাহা জানে। प्राचित भौतिकत द्वास्ति या चित्राक स्त्रम्, प्राचित भक्षण प्राच्या चत्र् तिक्कि डाका प्राचि क्या । डात कत्रास्त्र प्राथमिन भू क्या चित्रम् विकास ।

> सम् भाग सिंगा कर्ता हात, भन नर्भ गान अष्टा स्थार गान ५ना , गामान सिंगा क्रांचा करान स्थान कृष्म व्यालन गाम भग क्रांचा भारत निया गान अप भग देव उपालि ल्डांग गान अप भनित्र। भारत निम्ह कर्ता गान श्री भरित्र।

> > करित आधान भारत या करा नहीं नाना करने नहीं करत नाना अने करेन कुरार अर्थन भारत करते जान असे अर्थार्थना

य ভिक्त हामार नर्श देश्य नाशि मारन,
गृहार्ड निक्नन द्य नृहाशी हशास्त ভारतामानम देहांस, सिंहे कानकाता हेन्द्राम हेक्कनरकन चिक्रमनभाता नाहि हाहि, नाथ।

দাও ভক্তি শান্তিবস,
স্থিম স্থা পূৰ্ণ কবি মঙ্গলকলস
সংসাবভবনদাবে। যে ভক্তি-অমৃত
সমস্ত জীবনে মোৰ হইবে বিস্তৃত
নিগৃত গভীৰ, সৰ্ব কৰ্মে দিবে বল,
বাৰ্থ শুভ চেষ্টাবেও কৰিবে সফল
আনন্দে কলাগে। সৰ প্ৰেমে দিবে ভৃপ্তি,
সৰ্ব তৃংখে দিবে কেম, সৰ্ব স্থাথে দাপ্তি
দাহহীন।

সম্বিয়া ভাব-সঞ্নীৰ চিত্ত ববে প্ৰিপূৰ্ণ অমত্ত গন্থীব। माइक्ष्मक्तिश्वां ख्याकीत्तम लाम किंदि कारम सिख आमरम आवाम— ट्यामि दिक्तव कर्ष जार्यस्थां सि देकर्नार्य कर्षण्च भाग , राष्ट्रार्याण्ड रीमि श्रम ह भक्षम खर्ब , श्रक्षक्व गुरक् व्यामिक्षण्य खर्व , श्रक्षक्व गुरक् व्यामिक्षण्य खर्व , श्रक्षक्व गुरक् व्यामिक्षण्य , श्राच्याक्षण्य अर्थ विश्व खर्य , श्राच्याक्षण्य मानाव्य मन् माना भारत्य आमिक्ष मानाव्य मन् भूष्मशरक्ष-माथा ।

আজি দেই ভাবাবেশ
সৈই বিহবল হা যদি হয়ে থাকে শেষ,
প্রকৃতিব স্পর্কানাই গিয়ে থাকে দ্বে —
কোনো তথে নাহি। পল্লী হতে বাজপুরে
তবাব হনেছ মাবে, দাও চিতে বল—
দেখাও সংহার মৃতি কমিন নির্মণ।

আঘাতসংঘাত-মাঝে দাঁড়াইয়ু আসি।
অঙ্গদ কুওল কণ্টা অলংকারবাশি
থলিয়া কেলেছি দূরে। দাও হস্তে তুলি
নিজহাতে তোমার অমাঘ শরগুলি,
গোমার অক্ষয় তুণ। অস্ত্রে দীক্ষা দেহো,
নণগুক। তোমাব প্রবল পিতৃত্রেহ
ধ্রনিয়া উঠুক আজি কঠিন আদেশে।

কৰো মোরে সম্মানিত নব বীববেশে, তক্ত কর্তবাভারে, ত্রুসত কঠোব বেদনায়। পরাইয়া দাও অঙ্গে মোর ফেডচিফ-অলংকাব। ধন্য কবো দাসে সফল চেষ্টায় আব নিফল প্রয়াসে। ভাবেব ললিত ক্রোড়ে না রাখি নিলীন কর্মফেত্রে করি দাও সক্ষম স্বাধীন। এ তুর্ভাগা দেশ হতে হে মঙ্গলময়,
দ্ব করে দাও তুমি সব তুক্ত ভয়—
লোকভয়, রাজভয়, মৃত্যুভয় আব।
দীনপ্রাণ ত্বলেব এ পাধাণাভাব,
এই চিরপেষণ্যয়ণা, ধৃলিওলে
এই নিভা অবমতি, দণ্ডে পলে পলে
এই আত্ম-অবমান, অন্তবে বাহিবে
এই দাসাধেব বজ্য, হতে নওলিবে
সহত্রেব পদপ্রান্তভলে বাব্যাব

এ বৃহৎ লজ্জাবালি চবণ-আঘাতে
চূর্ণ করি দূব করো। মঙ্গলপ্রভাবে
মস্ক তুলিতে দাও অন্য অকাশে,
উদাব আলোক-মাঝে, উন্তুল বাহাসে।

অধকার গতে পাকে অধ্ব স্বীম্প—
আপনার ললাটের রতনপ্রদীপ
নাছি জানে, নাছি জানে স্থালোকলেশ।
তেমনি খাধারে আছে এই অধ্ব দেশ
তে দওবিধাতা বাজা— যে দীপ্ত রতন
পরায়ে দিয়েছ ভালে গ্রহার যতন
নাছি জানে, নাছি জানে গ্রামার আলোক।

নিতা বতে আপনাব অন্তিরেব শোক, জনমেব গ্লানি। তব আদর্শ মহান আপনাব পরিমাপে কবি খান খান বেখেতে ধলিতে। প্রাতৃ, হেবিতে ভোমায় তুলিতে হয় না মাথা উপর্লিনে হায়।

> या अक डनी लक लाएकन निर्च या अध कर्नि शान स्वित्न मान्त ?

তোমাবে শতধা কবি কৃত্র কবি দিয়া মাটিতে লুটায় যাবা ৩৩-মুগু-হিয়া, সমস্ত ধবলা আজি অবতেলাভবে পা রেখেছে ভাতাদের মাধাব টুপবে।

> মনুষ্য হুচ্ছ করি যাবা সাবাবেলা ভোমাবে লইয়া শুধু কবে পুজাপেলা মুক্ষভাবভোগে, সেই রক্ষ শিশুদল সমস্ত বিশ্বের আজি থেলার পুরল। ভোমাবে আপন-সাপে করিয়া সমান যে থব বামনগণ করে অবমান কে ভাদের দিবে মান। নিজ মধ্বেরে ভোমারেই প্রাণ দিতে যাবা লপ্রা করে কে ভাদের দিবে প্রাণ। ভোমারেও যারা ভাগ করে কে ভাদের দিবে ঐকাধারা।

হে রাক্তেপ্র, ভোমা-কাছে নত হতে গেলে
যে উদ্বে উঠিতে হয় সেথা বাস্থ মেলে
লহো ডাকি স্বুছর্গম বন্ধুর কঠিন
লৈলপথে— অগ্রসর করো প্রতিদিন,
যে মহান পথে তব বরপুত্রগণ
গিয়াছেন পদে পদে করিয়া অর্জন
মরণ-অধিক ত্বং ।

ওগো অন্তর্যামী,
অন্তরে যে রহিয়াছে অনির্বাণ আমি
ছঃখে তার লব আর দিব পরিচয়।
তারে যেন মান নাহি করে কোনো ভয়,
তারে যেন কোনো লোভ না করে চঞ্চল।
দে যেন জ্ঞানের পথে রহে সমুজ্জ্ল,
জীবনের কর্মে যেন করে জ্যোভি দান,
মৃত্যুর বিশ্রাম যেন করে মহীয়ান।

ত্র্গম পথের প্রান্তে পাছশালা-'পরে
যাহারা পড়িয়া ছিল ভাবাবেশভরে
রসপানে হতজ্ঞান, যাহারা নিয়ত
রাখে নাই আপনারে উন্তত জাগ্রত—
মৃদ্ধ মৃঢ় জানে নাই, বিশ্বযাত্রীদলে
কখন চলিয়া গেছে সুদ্র অচলে
বাজায়ে বিজয়শন্ধ। শুধু দীর্ঘ বেলা
তোমারে খেলনা করি করিয়াছে খেলা—

কর্মেরে করেছে পদ্ নিরর্থ আচারে, জ্ঞানেরে করেছে হত শাস্ত্রকারাগারে, আপন কক্ষের মাঝে বৃহৎ ভ্বন করেছে সংকীর্ণ ক্ষধি দ্বারবাভায়ন— তারা আজ কাঁদিতেছে। আসিয়াছে নিশা— কোপা যাত্রী, কোপা পপ, কোপায় রে দিশা। তুমি সর্বাপ্রয়, এ কি শুধু শৃহাকথা ? ভয় শুধু তোমা-'পরে বিশাসহীনতা হে রাজন্।

> लाक छय़ ? त्कन लाक छय़, लाक भाव । চित्र पियम्त्र भित्र प्रया कान् लाक-मार्थ ?

রাজভয় কার তরে হে রাজেন্দ্র। তুমি যার বিরাজ অন্তরে লভে সে কারার মাঝে ত্রিভ্বনময় তব ক্রোড়, স্বাধীন সে বন্দীশালে।

মৃত্যুভয়
কী লাগিয়া হে অমৃত। হু দিনের প্রাণ
লুপু হলে তথনি কি ফুরাইবে দান—
এত প্রাণদৈশ্য প্রভু, ভাণ্ডারেতে তব ?
সেই অবিশ্বাসে প্রাণ আঁকড়িয়া রব ?

কোপা লোক, কোপা রাজা, কোপা ভয় কার। তুমি নিত্য আছ, আমি নিত্য সে তোমার। আমারে সঞ্জন করি যে মহাস্মান
দিয়েছ আপন হস্তে, রহিতে পরান
ভার অপমান যেন সহা নাহি করি।
যে আলোক আলায়েছ, দিবসশবরী
ভার উপ্রশিষা যেন সব-উচ্চে রাখি,
অনাদর হতে ভারে প্রাণ দিয়া ঢাকি।
মোর মহায়ুর সে যে ভোমারি প্রতিমা,
আত্মার মহরে মম ভোমারি মতিমা,
মহেরর।

•

সেধায় যে পদকেপ করে.

অবমান বহি আনে অবভার ভরে,
ভাক-না সে মহারাজ বিশ্বমহী হলে
ভাবে যেন দও দিই দেবস্থাহী ব'লে

স্বশক্তি লয়ে মোর। যাক আর সব,
আপন গৌরবে রাশি ভোমার গৌরব।

তুমি মোরে অর্পিয়াছ যত অধিকার ফুগ্ন না করিয়া কতু কণামাত্র তার সম্পূর্ণ সঁপিয়া দিব তোমার চরণে অকুন্তিত রাখি তাবে বিপদে মবণে। জীবন সার্থক হবে তবে।

চিরদিন
জ্ঞান যেন থাকে মৃক্ত শৃঙ্খলবিহীন।
ভক্তি যেন ভয়ে নাহি হয় পদানত
পৃথিবীর কাবো কাছে। শুভ চেঠা যত
কোনো বাধা নাহি মানে কোনো শক্তি হতে।
আত্মা থেন দিবাবাত্রি অবাবিত স্রোতে
সকল উল্লম লয়ে ধায় তোমা-পানে
সর্ব বন্ধ টুটি। সদা লেখা থাকে প্রাণে,
'তুমি যা দিয়েছ মোবে অধিকাবভাব
ভাহা কেড়ে নিতে দিলে অমান্য তোমাব।'

অংশে লাজে নতলিবে নিতা নিবৰ্ধি
অপমান অবিচাৰ সহা কৰে যাত
তবে সেই দীন প্ৰাণে তব সভা হায
দাও দাও মান হয়। তবল আয়ায
তোমাৰে ধৰিতে নাৰে দৃছিনিদাভাৰে।
ফীলপ্ৰাণ , হামাৰেও ক্ষুত্ৰলী ববৰ
আপনাৰ মহে। — যত আদেশ , শমাৰ
পতে পাকে, আৰেশে নিবস কাচে ভাব।
প্ৰাপ্ত প্ৰামান আমি গ্ৰাস কৰে ভাবে।
চুলিকে , মিপা। মান, মিপা। বাৰহাৰে,
মিপা। চিতে, মিণা। তাৰ মন্তক মাডায়ে —
না পাৰে হাডাতে ভাবে ইনিয়া দাড়ায়ে।

অপমানে-নত্তিব ভ্যো-ভাত জন মিপাবে ভাতিমা দেয় ত্ব সিতাসন। হে সকল ঈশ্বরের পরম ঈশ্বর, তপোবনতরুচ্ছায়ে মেঘমন্দ্রর ঘোষণা করিয়াছিল সবার উপরে অগ্নিতে, জলেতে, এই বিশ্বচরাচবে, বনস্পতি-ওষ্ণিতে এক দেবতার অথণ্ড অক্ষয় এক্য। সে বাক্য উদার এই ভারতেরি।

যাঁরা সবল স্বাধীন
নির্ভয় সরলপ্রাণ, বন্ধনবিহীন,
সদর্পে ফিবিয়াছেন বীর্যজ্যোতিয়ান
লাজ্বিয়া সরণ্য নদী পর্বত পাষাণ
তাঁবা এক মহান বিপুল সত্যপথে
তোমাবে লভিয়াছেন নিখিল জগতে।
কোনোখানে না মানিয়া সায়ার নিষেধ
সবলে সমস্ত বিশ্ব ক্রেছেন ভেদ।

তিহার। দেখিয়াছেন— বিশ্বচরাচর
কবিছে আনন্দ হতে আনন্দনিধার।
আগ্নির প্রত্যেক শিখা ভাগে এব কাঁপে,
বানুর প্রত্যেক শাস ভোগারি প্রত্যেপ,
ভোগারি আন্দেশ রহি মাতুর নিরারণ
চরাচর মন্বিয়া করে যাওাগাও।
গিরি উটিয়াছে উকের তামারি ইপিতে,
নালী ধায় নিকে নিকে তামারি সাগাতে।
শ্যো শ্যো চপ্রত্য গ্রহতারা যত
আনন্ত প্রাণের মারে কাঁপিছে নিয়ত।

ভাঁছবা ছিলেন নিতা এ বিশ-আগ্য কেবল ভোমাবি ভিয়ে, প্ৰথাবি নিদ্যা, ভোমাবি শাসনগ্ৰ দীপত্পুমুখ বিশ্বভ্ৰবেৰ চজুৱ সংখুখে। আমরা কোথায় আছি, কোথায় স্থদ্রে দীপহীন জীর্ণভিত্তি অবসাদপুরে ভগ্নগৃহে, সহম্রের ক্রকৃটির নীচে কুজপৃষ্ঠে নভশিরে; সহস্রের পিছে চলিয়াছি প্রভূষের তর্জনীসংকতে কটাক্ষে কাঁপিয়া; লইয়াছি শির পেতে সহস্রশাসনশাস্ত্র।

সংকৃচিতকায়া
কাঁপিতেছে রচি নিজ কল্পনার ছায়া।
সন্ধ্যার আঁধারে বসি নিরানন্দ ঘরে
দীন-আত্মা মরিতেছে শত লক্ষ ডরে।
পদে পদে অস্তচিত্তে হয়ে লুঠ্যমান
ধ্লিতলে, তোমারে যে করি অপ্রমাণ।
যেন মোরা পিতৃহারা ধাই পথে পথে
অনীশ্বর অরাজক ভয়ার্ড জগতে।

একদা এ ভারতের কোন্ বনতলে
কৈ তৃমি মহানপ্রাণ, কী আনন্দবলে
উচ্চারি উঠিলে উচ্চে, 'লোনো বিশ্বজন,
লোনো অমৃতের পুত্র যত দেবগণ
দিব্যধামবাসী, আমি জেনেছি ভাঁহারে
মহাস্ত পুরুষ যিনি আধারের পারে
জ্যোতির্ময়। ভাঁরে জেনে, ভার পানে চাছি
মৃত্যুরে লভিবতে পার, অন্ত পথ নাহি।'

আরবার এ ভারতে কে দিবে গো আনি সে মহা-আনন্দমন্ত্র, সে উদাত্তবাণী সঞ্চীবনী, স্বর্গে মর্ভে সেই মৃত্যুঞ্জয় পরম ঘোষণা, সেই একাস্ত নিভয় অনস্ত অমৃতবার্তা।

> রে মৃত ভারত, শুধু সেই এক আছে, নাহি অক্য পথ।

এ মৃত্যু ছেদিতে হবে, এই ভয়জাল, এই পুঞ্গপুঞ্জীভূত জড়ের জঞ্জাল, মৃত আবর্জনা। ওরে জাগিতেই হবে এ দীপ্ত প্রভাতকালে, এ জাগ্রত ভবে, এই কর্মধামে। ছুই নেত্র করি আধা জ্ঞানে বাধা, কর্মে বাধা, গতিপথে বাধা, আচারে বিচারে বাধা করি দিয়া দূর ধরিতে হইবে মৃক্ত বিহঙ্গের স্থুর আনন্দে উদার উচ্চ।

> সমস্ত তিমির ভেদ করি দেখিতে হইবে উপ্ত শির এক পূর্ণ জ্যোতির্ময়ে অনস্ত ভুবনে। ঘোষণা করিতে হবে অসংশয় মনে, 'ওগো দিব্যধামবাসী দেবগণ যত, মোরা অমৃতের পুত্র তোমাদের মতো।'

তব চরণের আলা ওগো মহারাজ,
ছাড়ি নাই। এত যে হীনতা, এত লাজ,
তব্ ছাড়ি নাই আলা। তোমার বিধান
কোনে কী ইপ্রজাল করে যে নির্মাণ
সংগোপনে স্বার নয়ন-অন্তর্গলে,
কেহ নাহি জানে। তোমার নির্দিষ্ট কালে
মুহুর্তেই অসম্ব আসে কোপা হতে
আপনারে বাজ কবি আপন আলোতে
চিরপ্রতীক্ষিত চির-সম্বের বেশে।

আছ তুমি অন্তর্গানী, এ লজ্জিভ দেলে;
সবাব অজ্ঞাভসারে ক্রদ্যে ক্রদ্যে
গ্রুত গ্রুত রাত্রিদিন জাগকক হয়ে
ভোমার নিগৃত শক্তি কবিভেতে কাজ।
আমি ভাজি নাই আশা ধ্যো মহারাজ।

পতিত ভারতে তুমি কোন্ জাগরণে জাগাইবে হে মহেশ, কোন্ মহাক্রণে, সে মোর কল্পনাতীত। কী তাহার কাজ, কী তাহার শক্তি দেব, কী তাহার সাজ, কোন্ পথ তার পথ, কোন্ মহিমায় দাঁড়াবে সে সম্পদের শিখরসীমায় তোমার মহিমজ্যোতি করিতে প্রকাশ নবীন প্রভাতে।

আজি নিশার আকাশ যে আদর্শে রচিয়াছে আলোকের মালা, সাজায়েছে আপনাব অন্ধকার থালা, ধরিয়াছে ধরিত্রীর মাথাব উপব, সে আদর্শ প্রভাতেব নহে, মহেশ্বব। জাগিয়া উঠিবে প্রাচী যে অকণালোকে সে কিরণ নাই আজি নিশীথের চোখে। শতাব্দীর সূর্য আজি বক্তমেঘ-মাঝে অস্ত গেল; হিংসাব উংসবে আজি বাজে অস্ত্রে অস্ত্রে মবণের উন্মাদ রাগিনা ভয়ংকরী। দয়াহান সভা গ্রানাগিনা তুলেছে কৃটিল ফণা চক্ষের নিমিষে গুপু বিষদম্ভ ভাব ভবি ভার বিষে।

স্বার্থে সাথে বেধেছে সংঘাত; লোভে লোভে ঘটেছে সংগ্রাম , প্রল্মমন্ত্রনকোতে ভারতি করেশী বর্বতা উঠিয়াছে ভারতি প্রশান হতে। লাজা শবম তেয়ালি জাতিপ্রেম নাম ধরি প্রচণ্ড অল্লায় ধর্মেরে ভাসাতে চাতে বলের বল্লায়। করিদল চাংকাবিছে জালাইয়া ভীতি শ্রামন-কুরুবদের বাভাকাভি-লাতি।

স্বার্থের সমাপ্তি অপঘাতে। অকস্মাৎ পরিপূর্ণ ফীতি-মাঝে দারুণ আঘাত বিদীর্ণ বিকীর্ণ করি চূর্ণ করে তারে কালঝঞ্জা-ঝংকারিত তুর্যোগ-আধারে। একের স্পর্ধারে কভু নাহি দেয় স্থান দীর্ঘকাল নিখিলের বিরাট বিধান।

> স্বার্থ যত পূর্ণ হয় লোভক্ষুধানল তত তার বেড়ে ওঠে— বিশ্বধরাতল আপনার খান্ত বলি না করি বিচার জঠরে পুরিতে চায়। বীভংস আহার বীভংস ক্ষ্ধারে করে নির্দয় নিলাজ, তথন গজিয়া নামে তব রুদ্র বাজ।

> > ছুটিয়াছে জাতিপ্রেম মৃত্যুর সন্ধানে বাহি স্বার্থতরী, গুপু পর্বতের পানে।

এই পশ্চিমের কোণে রক্তরাগরেখা
নহে কভু সৌমারশ্মি অরুণের লেখা
তব নব প্রভাতের। এ শুধু দারুণ
সন্ধ্যার প্রলয়দীপ্তি। চিতার আগুন
পশ্চিমসমুদ্রতটে করিছে উদ্গার
বিক্লাঙ্গল সার্থদীপ্ত লুক সভাতার
মশাল হইতে লয়ে শেষ অগ্নিকণা।

এই শ্মশানের মাঝে শক্তির সাধনা তব আরাধনা নহে হে বিশ্বপালক। তোমার নিখিলপানী আনন্দ-আলোক হয়তো লুকায়ে আছে পূর্বসিক্ষুতীরে বহু ধৈর্যে নম্র স্তব্দ হঃথের তিমিরে সর্বরিক্ত অঞ্চসিক্ত দৈক্তের দীকায় দীর্যকাল— ত্রাহ্মসূত্রের প্রতীকায়। সে পরম পবিপূর্ণ প্রভাতের লাগি হে ভাবত, স্বজ্থে বহ তুমি জাগি স্বলনির্মলচিত্ত; সকল বন্ধনে আগ্রাবে স্বাধীন বাখি— পুপ্প ও চন্দ্রেন আপনার অন্তরের মাহাত্মামন্দির সজ্জিত স্বগন্ধি কবি ত্থেন্দ্রনির ভাবে পদতলে নিতা রাখিয়া নীব্রে।

> তাঁ হতে বঞ্চিত কৰে তোমাৰে এ ভবে এমন কেহই নাই— সেই গ্ৰ্ভবে স্বভয়ে থাকে৷ তুমি নিভ্য়-অন্তবে ভাব হস্ত হতে লয়ে অক্ষয় সম্মান। ধ্বায় হোক-না তব যত নিম্ন স্থান ভাব পাদপাঠ কৰাে সে আসন তব যাঁব পাদবেণুক্ণা এ নিখিল ভব।

সে উদাব প্রভাষের প্রথম অকণ যথনি মেলিরে নেত্র— প্রশাস্থ ককণ— শুভ্রশিব অভ্রভেনা উদয়নিখার হৈ তুঃখা জাগ্রত দল, তা লগ্যার প্রথম স্টোত তার যেন উঠে বাজি, প্রথম ঘোষণাধ্রনি।

> कृषि ,शतः भागिः, हिन्दि सां किर्मा नामाः हेक भिन डेर्मा कृष्टि गाविष्या नग्नाः, 'এসা শাখি, বিধা এব নকা লগানিকা, भिশाहन পিশাতের বঞ্চীপশিষা करिया लिख्छ । এব বিশাল সংখ্যা বিশ্বলোক-ঈশ্বের বর্বাছরেশে। এব বৈধি দৈববাধ , নম্ধা ,শম্ব সমৃত মুক্টশেষ, শ্রি পুরস্কার।'

তাঁরি হস্ত হতে নিয়ো তব ছংখতার হে ছংখী, হে দীনহান। দীনতা তোমার ধরিবে ঐশ্বর্যদীপ্তি যদি নত রহে তাঁরি দ্বারে। আর কেহ নহে নহে নহে— তিনি ছাড়া আর কেহ নাই ত্রিসংসারে যার কাছে তব শির লুটাইতে পারে।

পিতৃরূপে রয়েছেন তিনি, পিতৃ-মাঝে
নমি তাঁরে। তাঁহারি দক্ষিণ হস্ত রাজে
স্থায়দণ্ড-'পরে, নতশিরে লই তুলি
তাহার শাসন; তাঁরি চরণ-অঙ্গুলি
আছে মহবের 'পরে, মহতের দারে
আপনারে নম্র ক'রে পূজা করি তাঁরে।
তাঁরি হস্তম্পর্শরূপে করি অন্ধুভব
মস্তকে তুলিয়া লই হৃঃখের গৌরব।

তোমার স্থায়ের দণ্ড প্রত্যেকের করে
অর্পণ করেছ নিজে। প্রত্যেকের 'পরে
দিয়েছ শাসনভার হে রাজাধিরাজ।
সে গুরু সমান তব, সে গুরুহ কাজ,
নমিয়া ভোমারে বেন শিরোধার্য করি
সবিনয়ে। তব কার্যে বেন নাহি ডরি
কভু কারে।

ক্ষমা যেথা ক্ষীণ ত্র্বলভা হে ক্ষম, নির্চুর যেন হতে পারি ভথা ভোমার আদেশে। যেন রসনার মম সভ্যবাক্য কলি উঠে পরস্কাসম ভোমার ইঙ্গিভে। যেন রাখি ভব মান ভোমার বিচারাসনে লয়ে নিজ স্থান। অক্যার যে করে আর অক্যায় যে সহে ভব ঘুণা যেন ভারে তৃণসম দহে। ওরে মৌনসূক, কেন আছিস নীববে অন্তর কবিয়া রুদ্ধ। এ মুখব ভবে ভোর কোনো কথা নাই, বে আনন্দহীন ? কোনো সভ্য পড়ে নাই চোখে? ভরে দীন, কঠে নাই কোনো সংগীতের নব ভান ?

> তোর গৃহপ্রান্ত চুন্ধি সমুদ্র মহান গাহিছে অনন্ত গাথা— পশ্চিমে পুবরে। কত নদী নিববধি ধায় কলরবে তবল সংগীতধারা হয়ে মূর্তিমতী। শুণ তুমি দেখ নাই সে প্রত্যক্ষ জ্যোতি যাহা সতো, যাহা গীতে, আনন্দে আশায় ফুটে উঠে নব নব বিচিত্র ভাষায়। তব সতা, তব গান, কদ্ধ হয়ে রাজে রাত্রিদিন জীর্ণ শাল্পে শুক্পত্র-মানে।

किंद्ध (यथा ভ्यम्य, डेफ (यथा सित.

छान (यथा मृक, यथा गृष्ट्य প्राधित

णालन প्राक्रण हाल नियमन्त्रा

तस्त्रात्व तात्व नार्थे थंध कृष्ट कृति.

(यथा वाका क्रम्यात हेश्मम्थ हाल

हेक्कृमिया हेक्क. (यथा नियादिक त्यादक हिल्ला हिल्ला हिल्ला हिल्ला क्रिला कर्मिया स्था

ज्ञालस महास्तिक हित्र विश्व हाथ-

(मभा कुछ चां 5 रतन सनना ना नि निहारतन सां 5 अप रमाल ना है छ। भि, (भोना मंद्र ना ना ना ना ना स्था कुष्म भंद्र कर्म हिमा चां ना ना न

> निक छात्र निर्मा धाषा । करित लिए। भारत हार जिस करते करता छ। विस्

আমি ভালোবাসি দেব, এই বাঙ্গালার
দিগস্থসার ক্ষেত্রে যে শান্তি উদার
বিবাজ করিছে নিত্য— মুক্ত নীলাম্বরে
অচ্ছায় আলোক গাহে বৈরাগ্যের স্বরে
যে ভৈরবীগান, যে মাধুরী একাকিনী
নদীর নির্জন তটে বাজায় কিংকিনী
তবল কল্লোলরোলে, যে সরল স্নেহ
তকচ্ছায়া-সাথে মিশি স্নিগ্ধপল্লীগেহ
অঞ্চলে আবরি আছে, যে মোর ভবন
আকাশে বাতাসে আর আলোকে মগন
সম্ভোষে কল্যাণে প্রেমে—

করো আশীর্বাদ, যথনি তোমার দৃত আনিবে সংবাদ তথনি তোমার কার্যে আনন্দিত মনে সব ছাড়ি যেতে পারি ছঃথে ও মবণে। ত্র নদীব কলধ্বনি যেপায় বাঙ্গে না
মাতৃকলকণ্ঠসম, যেপায় সাজে না
কোমলা উবরা ভূমি নব-নবোংসবে
নবীনববন বস্ত্রে যৌবনগৌববে
বসত্থে শবতে বরষায়, কভাকাল
দিবসবাত্রিবে যেপা করে না প্রকাল
পূর্ণপ্রস্কৃতিতকপে, যেপা মাঙ্ডায়া
চিন্ত-অন্তঃপুবে নাহি করে যাও্যা-আসা
কলাণী ক্রদয়লন্ত্রী, যেপা নিশিদিন
কল্পনা ফিবিয়া আসে পবিচ্যত্রীন
পরগৃহত্বাব হতে পথেব মাঝারে—

(मशानिध यांडे यमि, सन एयन পारत महाछ होनिया निष्ड अवहाँन .थाएड उन मनानस्भाता भन गेंडे इर्ड। আমার সকল অঙ্গে তোমার পরশ লগ্ন হয়ে রহিয়াছে রজনীদিবস প্রাণেশ্বর, এই কথা নিত্য মনে আনি রাথিব পবিত্র করি মোর তমুখানি। মনে তুমি বিরাজিছ হে পরমজ্ঞান, এই কথা সদা স্মরি মোর সর্বধ্যান সর্বচিন্তা হতে আমি সর্বচেষ্টা করি সর্বমিথ্যা রাখি দিব দূরে পরিহরি।

হাদয়ে রয়েছে তব অচল আসন
এই কথা মনে রেখে করিব শাসন
সকল কৃটিল দেষ, সর্ব অমঙ্গল—
প্রেমেরে রাখিব করি প্রস্কৃট নির্মল।
সর্ব কর্মে তব শক্তি এই জেনে সার
করিব সকল কর্মে তোমারে প্রচার।

অচিন্তা এ ব্রহ্মাণ্ডের লোক-লোকান্তরে অনন্ত শাসন থাব চিরকাল এবে প্রকাশ, প্রত্যেক অণুব মাঝে হতেছে প্রকাশ, থুগে যুগে মানবের মহা-ইভিহাস বহিয়া চলেছে সদা ধরণীর 'পব থাব ভর্জনীর ছায়া, সেই মহেশর আমার চৈত্ত্য-মাঝে প্রভাক পলকে কবিছেন অধিদান— ভাষারি আলোকে চক্ষু মোর দৃষ্টিদীপ্ত, ভাষাবি পরশো অক্ত মোর দৃষ্টিদীপ্ত, ভাষাবি পরশো অক্ত মোর দৃষ্টিদীপ্ত, ভাষাবি পরশো অক্ত মোর দুষ্টিদীপ্ত, ভাষাবি পরশো

যোগা চলি, যোগা রহি, যোগা বাস করি, প্রেটাক নিশাসে মার এই কথা শ্রি— আপন মন্তক-পরে স্বদা স্বধা বহির ভাঁহার গ্র, নিজেব ন্যুগা। না গণি মনের ক্ষতি ধনের ক্ষতিতে হে বরেণ্য, এই বর দেহো মোর চিতে। যে ঐশর্যে পরিপূর্ণ তোমার ভ্বন এই তৃণভূমি হতে স্থানুর গগন— যে আলোকে, যে সংগীতে, যে সৌন্দর্যধনে, তার মূল্য নিত্য যেন থাকে মোর মনে স্বাধীন সবল শাস্ত সরল সস্তোষ।

অদৃষ্টেরে কভূ যেন নাহি দিই দোষ।
কোনো হুঃধ কোনো ক্ষতি-অভাবের তরে
বিস্বাদ না জ্বমে যেন িন্টের্মান্তরে,
ক্ষুত্তপত হারাইয়া। ধনীর সমাজে
না হয় না হোক স্থান, জগতের মাঝে
আমার আসন যেন রহে সর্ব ঠাই,
হে দেব, একাস্তিচিত্তে এই বর চাই।

এ কথা শ্বরণে রাখা কেন গো কঠিন, তুমি আছ সব চেয়ে, আছ নিশিদিন, আছ প্রতি কণে— আছ দ্রে, আছ কাছে, যাহা-কিছু আছে তুমি আছ ব'লে আছে।

ষেমনি প্রবেশ আমি করি লোকালয়ে,

যথনি মানুষ আসে স্কৃতিনিন্দা লয়ে—

লয়ে রাগ, লয়ে ছেব, লয়ে গর্ব তার—

অমনি সংসার ধরে পর্বত-আকার

আবরিয়া উপ্র লোক; তরজিয়া উঠে

লাজভয় লোভকোভ। নরের মৃক্টে

যে হীরক অলে তারি আলোকবলকে

অন্ত আলো নাহি হেরি ছালোকে ভূলোকে।

মানুষ সম্প্র এলে কেন সেই ক্রণে

তোমার সম্প্র আছি নাহি পড়ে মনে।

তোমারে বলেছে যারা, পুত্র হতে প্রিয়, বিস্ত হতে প্রিয়তর, যা-কিছু আত্মীয় সব হতে প্রিয়তম নিধিল ভ্বনে, আত্মার অন্তরতর— তাঁদের চরণে পাতিয়া রাধিতে চাহি হৃদয় আমার।

> সে সরল শাস্ত প্রেম গভীর উদার— সে নিশ্চিত নিঃসংশয়, সেই স্থানিবিড় সহজ মিলনাবেগ, সেই চিরস্থির আত্মার একাগ্র লক্ষ্য, সেই সর্ব কাজে সহজেই সঞ্চরণ সদা তোমা-মাঝে গন্ধীর প্রশাস্ত চিত্তে, হে অন্তর্যামী, কেমনে করিব লাভ। পদে পদে আমি প্রেমের প্রবাহ তব সহজ বিশ্বাসে। অস্তরে টানিয়া লব নিশ্বাসে নিশ্বাসে।

হে অনস্ত, ষেপা ভূমি ধারণা-অতীত সেপা হতে আনন্দের অব্যক্ত সংগীত করিয়া পড়িছে নামি— অদৃশ্র অগম হিমাজিশিধর হতে জাহ্নবীর সম।

সে ধ্যানাত্রভেদী শৃঙ্গ যেথা স্বর্ণলেখা জগতের প্রাভঃকালে দিয়েছিল দেখা আদি অন্ধকার-মাঝে, যেথা রক্তজ্ববি অস্ত যাবে জগতের প্রাস্ত সন্ধ্যারবি, নব নব ভ্বনের জ্যোতির্বাম্পরাশি পুঞ্জ পুঞ্জ নীহারিকা যার বক্ষে আসি ফিরিছে স্ফলবেগে মেঘখণ্ডসম যুগে-যুগাস্তরে— চিন্তবাভায়ন মম সে অগম্য অচিস্থ্যের পানে রাত্রিদিন রাখিব উন্মুক্ত করি হে অন্তবিহীন।

একাধারে তুমিই আকাশ, তুমি নীড়।
হে স্থলর, নীড়ে তব প্রেম স্থনিবিড়
প্রতি ক্ষণে নানা বর্ণে নানা গন্ধে-গীতে
মুগ্ন প্রাণ বেষ্টন করেছে চারি ভিতে।
সেথা উষা ডান হাতে ধরি স্বর্ণথালা
নিয়ে আসে একখানি মাধুর্যের মালা
নীরবে পরায়ে দিতে ধরার ললাটে;
সন্ধ্যা আসে নম্মুখে ধেরুশৃন্থ মাঠে
চিহ্নহীন পথ দিয়ে লয়ে স্বর্ণধারি
পশ্চিমসমুদ্র হতে ভরি শান্তিবারি।

তুমি যেথা আমাদের আত্মার আকাশ অপার সঞ্চারক্ষেত্র, সেথা শুভ্র ভাস; দিন নাই, রাত্রি নাই, নাই জনপ্রাণী, বর্ণ নাই, গন্ধ নাই— নাই নাই বাণী। তব প্রেমে ধতা তৃমি করেছ আমারে প্রিয়তম, তব্ শুধু মাধুর্য-মাঝারে চাহি না নিমগ্ন করে রাখিতে হৃদয়। আপনি যেথায় ধরা দিলে স্নেহময়, বিচিত্র সৌন্দর্যডোরে, কত স্নেহে প্রেমে, কত রূপে— সেথা আমি রহিব না থেমে তোমার প্রণয়-অভিমানে। চিন্তে মোর জড়ায়ে বাঁধিব নাকো সস্তোষের ডোর।

> আমার অতীত তুমি যেথা সেইখানে অন্তরাত্মা ধায় নিত্য অনম্ভের টানে সকল বন্ধন-মাঝে— সেথায় উদার অন্তহীন শাস্তি আর মৃক্তির বিস্তার।

> > তোমার মাধ্য যেন বেঁধে নাহি রাখে, তব ঐশর্যের পানে টানে সে আমাকে।

হে দ্র হইতে দ্ব, হে নিকটতম,
যেথায় নিকটে তুমি সেথা তুমি মম;
যেথায় স্থারে তুমি সেথা আমি তব।
কাতে তুমি নানা ভাবে নিত্য নব নব
স্থাে তৃংখে জনমে মরণে। তব গান
জলস্থল শৃত্য হতে কবিছে আহ্বান
মোরে সর্ব কর্ম-মান্যে— বাজে গ্রুষরে
প্রহরে প্রহবে চিত্তকুহরে-কুহরে
তোমাব মঙ্গলমন্ত্র।

যেথা দূর তুমি
সেথা আত্মা হাবাইয়া সর্ব তটভূমি
তোমার নিঃসীম-মাঝে পূর্ণানন্দভবে
আপনারে নিঃশেষিয়া সমর্পণ কবে।
কাছে তুমি কর্মতট আত্মাতটিনীর,
দূরে তুমি শান্তিসিন্ধু অনন্ত গভীর।

মুক্ত করো, মুক্ত কবো নিন্দাপ্রশংসার
ছেছেল শৃঙ্খল হতে। সে কঠিন ভার
যদি ধসে যায় তবে মানুষেব মাঝে
সহজে ফিরিব আমি সংসাবেব কাজে—
ভোমারি আদেশ শুধু জয়ী হবে, নাথ।
ভোমার চরণপ্রাত্তে কবি প্রণিপাঙ
তব দও পুরস্কার অন্তবে গোপনে
লইব নীরবে ভুলি—

নিঃশশগমনে
চলে যাব কর্মক্ষেত্র-মাঝখান দিয়া
বহিয়া অসংখা কাজে একনিষ্ঠ হিয়া,
সঁপিয়া অবার্থ গতি সহল্র চেষ্টায়,
এক নিতা ভক্তিবলে, নদা যথা ধায়
লক্ষ লোকাল্য-মাঝে নানা কর্ম সারি
সন্মুনে পানে লয়ে বন্ধতান বারি।

তুর্দিন ঘনায়ে এল ঘন অন্ধকারে হে প্রাণেশ! দিগ্বিদিক রৃষ্টিবারিধারে ভেসে যায়, কুটিল কটাক্ষে হেসে যায় নির্তুর বিত্যংশিখা— উতরোল বায় তুলিল উতলা করি অরণ্যকানন।

আজি তুমি ডাকো অভিসারে হে মোহন,
হে জীবনস্বামী। অশ্রুসিক্ত বিশ্ব-মাঝে
কোনো ছঃথে, কোনো ভয়ে, কোনো বৃথা কাজে
রহিব না রুদ্ধ হয়ে। এ দীপ আমার
পিচ্ছিল তিমির পথে যেন বারস্বার
নিবে নাহি যায়— যেন আর্দ্র সমীরণে
ভোমার আহ্বান বাজে। ছঃখের বেষ্টনে
ছর্দিন রচিল আজি নিবিড় নির্জন;
হোক আজি ভোমা-সাথে একান্ত মিলন।

দীর্ঘকাল অনাবৃষ্টি, অতি দীর্ঘকাল.
হে ইন্দ্র, হৃদয়ে মম। দিক্চক্রবাল
ভয়ংকর শৃষ্ঠ হেরি, নাই কোনোখানে
সরস সজল রেখা— কেহ নাহি আনে
নববারিবর্ষণের শ্রামল সংবাদ।

যদি ইচ্ছা হয় দেব, আনো বন্ধনাদ প্রলয়মুখর হিংল্র ঝটিকার সাথে। পলে পলে বিহাতের বক্র ক্ষাঘাতে সচকিত করো মোর দিগ্দিগহুর। সংহরো সংহরো প্রভো, নিস্তন্ধ প্রখর এই রুজ, এই ব্যাপ্ত, এ নিঃশব্দ দাহ, নিঃসহ নৈরাশ্রভাপ। চাহো নাপ, চাহো জননী যেমন চাহে সজ্লনয়ানে পিতার ক্রোধের দিনে সন্থানের পানে। আমার এ মানসের কানন কাঙাল
শীর্ণ শুদ্ধ বাস্থ মেলি বহু দীর্ঘকাল
আছে ক্রুদ্ধ উধ্ব-পানে চাহি। ওহে নাথ,
এ কন্দ্র মধ্যাহ্ন-মাঝে কবে অকস্মাং
পথিক পবন কোন্ দূর হতে এসে
ব্যগ্র শাখাপ্রশাখায় চক্ষের নিমেষে
কানে কানে রটাইবে আনন্দমর্মর,
প্রতীক্ষায় পুল্কিয়া বন বনান্তর।

গন্তীর মাতৈঃমন্দ্র কোথা হতে ব'হে তোমার প্রদাদপুঞ্জ ঘনসমারোহে ফেলিবে আচ্ছন্ন করি নিবিড়চ্ছায়ায়। তার পরে বিপুল বর্ষণ, তাব পরে পরদিন প্রভাতের সৌম্যারবিকরে রিক্ত মালঞ্চের মাঝে পূজাপুষ্পরাশি নাহি জানি কোথা হতে উঠিবে বিকাশি। এ कथा मानिव आमि, এक इटड घ्रे कम्मान य इटड शास्त्र आनि ना किह्न्रे। कम्मान य किह्न् इय, क्वड इय क्वड्, किह्न थाक कारनाकाल, कारत वरण एड, कारत वरण आया मन, वृश्विटड ना लिख हिनकाण निविध्व विश्वक्षशास्त्र निख्य निवाक् हिर्दे।

> বাহিবে যাহার কিছুতে নাবিব যেতে, আদি অথ তাব, অর্থ তাব, তথে তাব বৃধিব কেমনে নিমেনের তবে। এই শুদু জানি মনে, সুক্র সে, মহান সে, মহা ভয়ংকব, বিচিত্র সে, অজেয় সে, মম মনোহর।

> > डेडा उन्ति, किछुड़े ना जानिया जानाएड निभित्नित हिडाया ड भाडेएड (डामाएड)

জীবনের সিংহদ্বারে পশিস্থ যে ক্ষণে এ আশ্চর্য সংসারের মহানিকেতনে সে ক্ষণ অজ্ঞাত মোর। কোন্ শক্তি মোরে ফুটাইল এ বিপুল রহস্তের ক্রোড়ে অর্ধরাত্রে মহারণ্যে মুকুলের মতো।

> তবু তো প্রভাতে শির করিয়া উন্নত যথনি নয়ন মেলি নিরখিমু ধরা কনককিরণ-গাঁথা নীলাম্বর-পরা, নিরখিমু স্থাথ-ছঃখে-থচিত সংসার, তথনি অজ্ঞাত এই রহস্ত অপার নিমেষেই মনে হল মাতৃবক্ষসম নিতান্তই পরিচিত, একান্তই মম।

> > রূপহীন জ্ঞানাতীত ভীষণ শক্তি ধরেছে আমার কাছে জননীমুরতি।

মৃত্যুও অজ্ঞাত মোর। আজি তার তরে কণে কণে শিহরিয়া কাঁপিতেছি ডরে। সংসারে বিদায় দিতে, আঁথি ছলছলি জীবন আঁকড়ি ধরি আপনার বলি' তুই ভূজে।

> ত্রে মৃত্, জীবন সংসার কে করিয়া রেখেছিল এত আপনার জনমনুকুর্ত হতে গোমার অজ্ঞাতে, ভোমার ইচ্ছার পুবে। মৃত্যুর প্রভাতে সেই অচেনার মৃথ কেরিবি আবার মৃত্তে চেনার মতো। জীবন আমার এত ভালোবাসি বলে হয়েছে প্রভায়, মৃত্যুবে এমনি ভালো বাসিব নিশ্চয়।

> > खन छ छ दूरण निर्ण कैएम निर्ण छ , भूद्र आचाम भाग्र शिर्म खना सुर्म।

বাসনারে থর্ব করি দাও হে প্রাণেশ।
সে শুধু সংগ্রাম করে লয়ে এক লেশ
রহতের সাথে। পণ রাথিয়া নিখিল
জিনিয়া নিতে সে চাহে শুধু এক তিল।
বাসনার কৃদ্র রাজ্য করি একাকার
দাও মোরে সম্থোধের মহা অধিকার।

অযাচিত যে সম্পদ অজস্র আকারে উষার আলোক হতে নিশার আঁধারে জলে স্থলে রচিয়াছে অনন্ত বিভব— সেই সর্বলভা স্থুখ অগুলা তুর্লভ সব চেয়ে। সে মহা-সহজ স্থুখানি পূর্ণশতদলসম কে দিবে গো আনি জলস্থল-আকাশের মাঝ্যান হতে ভাসাইয়া আপনাবে সহজ্বে স্রোতে। শক্তিদন্ত স্বাধিলোভ মারীন মতন দেখিতে দেখিতে আজি ঘিনিছে ভ্রন। দেশ হতে দেশান্তরে স্পর্কবিষ থার শান্তিময় পল্লা যত করে ছাবধান। যে প্রশান্ত সবলতা আনে সমুদ্দ্রন, স্নেহে যাহা বস্পিক, সংখ্যামে শীঙল, ছিল তাহা ভারতের ওপোননভলে।

> वश्राचित्रोन मन भन छाल छाल প্ৰিবাপে কৰি দিও উদান কলাণ, ভাচে জাবে স্বাভূতে অবারিত ধান প্ৰিও আগ্রায়কপে। আভি ভোচা নাশি চিন্ত যেপা ভিল স্পা এল স্বাবাশি, ভূপি যেপা ভিল স্পা এল স্বাভ্যন, শান্তি যেপা ভিল সেপা সাপের সমন।

কোরো না কোরো না লক্ষা হে ভারতবাসী,
শক্তিমদমন্ত ওই বণিক বিলাসী
ধনদৃপ্ত পশ্চিমের কটাক্ষসমূপে
শুদ্র উত্তরীয় পরি শাস্তসোম্যমূপে
সরল জীবনখানি করিতে বহন।

শুনো না কী বলে তারা; তব শ্রেষ্ঠ ধন থাকুক হাদয়ে তব, থাক্ তাহা ঘরে, থাক্ তাহা স্থাসন্ন ললাটের 'পরে অদৃশ্য মুকুট তব। দেখিতে যা বড়ো, চক্ষে যাহা স্থাকার হইয়াছে জড়ো, তারি কাছে অভিভূত হয়ে বারে বারে ল্টায়ো না আপনায়। স্বাধীন আত্মারে দারিজ্যের সিংহাসনে করো প্রতিষ্ঠিত রিক্ততার অবকাশে পূর্ণ করি চিত। হে ভারত, নূপভিরে শিখায়েছ তুমি
ত্যজিতে মৃকুট দণ্ড সিংহাসন ভূমি,
থরিতে দরিজ্ঞবৈশ; শিথায়েছ বীরে
ধর্মযুদ্ধে পদে পদে ক্ষমিতে অরিরে,
ভূলি জয় পরাজয় শর সংহরিতে।
কর্মীরে শিখালে ভূমি যোগযুক্ত চিতে
সর্বফলস্পৃহা ব্রন্মে দিতে উপহার।
গৃহীরে শিখালে গৃহ করিতে বিস্তার
প্রতিবেশী আত্মবন্ধ্ অভিধি অনাথে।

ভোগেরে বেঁধেছ তুমি সংযমের সাথে,
নির্মল বৈরাগ্যে দৈশ্য করেছ উজ্জল,
সম্পদেরে পুণাকর্মে করেছ মঙ্গল,
শিখায়েছ স্বার্থ ত্যজি সর্ব হৃংধে সুখে
সংসার রাখিতে নিত্য ব্রক্ষের সন্মুখে।

হে ভারত, তব শিক্ষা দিয়েছে যে ধন বাহিরে তাহার অতি অল্প আয়োজন, দেখিতে দীনের মতো, অন্তরে বিস্তার তাহার ঐশ্বর্য যত।

আজি সভ্যতার
অন্তর্থন আড়ম্বরে, উচ্চ আফালনে,
দরিক্রন্ধরপুষ্ট বিলাসলালনে,
অগণ্য চক্রের গর্জে মুখর ঘর্ষর
লোহবান্থ দানবের ভীষণ বর্বর
রুদ্ররক্ত-অগ্নিদীপ্ত পরম স্পর্ধায়
নিঃসংকোচে শান্তচিত্তে কে ধরিবে, হায়,
নীরবগৌরব সেই সৌম্য দীনবেশ
স্থাবিরল— নাহি যাহে চিন্তাচেষ্টালেশ।
কে রাখিবে ভরি নিজ অন্তর-আগার
আগ্রার সম্পদরাশি মঙ্গল উদার।

অন্তরের সে সম্পদ ফেলেছি হারায়ে।
তাই মোরা লজ্জানত; তাই সব গায়ে
ক্ষ্ধার্ত গুর্ভর দৈশ্য করিছে দংশন;
তাই আজি ব্রাহ্মণের বিরল বসন
সম্মান বহে না আর; নাহি ধ্যানবল,
শুধ্ জ্পমাত্র আছে, শুভিষ ক্বেল;
চিত্তহীন অর্থহীন অভ্যন্ত আচার—

সন্তোষের অন্তরেতে বীর্য নাহি আর, কেবল জড়হপুঞ্চ; ধর্ম প্রাণহীন ভার-সম চেপে আছে আড়াই কঠিন। ভাই আজি দলে দলে চাই ছুটিবারে পশ্চিমের পরিত্যক্ত বন্ধ লুটিবারে লুকাতে প্রাচীন দৈয়া। রুথা চেষ্টা ভাই, তব্য সঞ্চা লক্ষাভরা চিত্ত যেথা নাই। শক্তি মোর অতি অল্প হে দীনবংসল, আশা মোর অল্প নহে। তব জলস্থল তব জীবলোক -মাঝে যেথা আমি যাই, যেথায় দাঁড়াই আমি, সর্বত্রই চাই আমার আপন স্থান। দানপত্রে তব তোমার নিখিলখানি আমি লিখি লব।

> আপনারে নিশিদিন আপনি বহিয়া প্রতি ক্ষণে ক্লান্ত আমি। প্রান্ত সেই হিয়া তোমার সবারে মাঝে করিব স্থাপন তোমার সবারে করি আমার আপন। নিজ ক্ষুত্র তুঃখ স্থুখ জ্বলঘটসম চাপিছে তুর্ভর ভার মস্তকেতে মম। ভাঙি তাহা ডুব দিব বিশ্বসিন্ধনীরে, সহজে বিপুল জল বহি যাবে শিরে।

মাঝে মাঝে কভূ যবে অবসাদ আসি অস্তরের আলোক পলকে ফেলে গ্রাসি, মন্দপদে যবে শ্রাস্তি আসে তিল তিল, তোমার পূজার বৃস্ত করে সে শিপিল ম্রিয়মাণ— তথনো না যেন করি ভয়, তথনো অটল আশা যেন জেগে রয় তোমা-পানে।

> ভোমা-'পরে করিয়া নিভর সে প্রান্তির রাত্রে যেন সকল অস্তর নির্ভয়ে অর্পণ করি পথ্য লিভলে নিদ্রারে আহ্বান করি। প্রাণপণ বলে ক্লাস্তচিত্তে নাহি তুলি কীণ কলরব ভোমার প্রার অভি দরিদ্র উৎসব।

> > রাত্রি এনে দাও ভূমি দিবদের চোধে আবার জাগাতে ভারে নবীন আলোকে।

তব কাছে এই মোর শেষ নিবেদন—
সকল ক্ষীণতা মম করহ ছেদন
দূঢ়বলে, অন্তরের অন্তর হইতে,
প্রভু মোর। বীর্য দেহো স্থথের সহিতে
ম্থেরে কঠিন করি। বীর্য দেহো তথে
যাহে ত্বংথ আপনারে শান্ত স্মিতমুথে
পারে উপেক্ষিতে। ভকতিরে বীর্য দেহো
কর্মে যাহে হয় সে সফল, প্রীতি স্নেহ
পুণাে ওঠে ফুটি। বীর্য দেহো ক্ষুদ্রজনে
না করিতে হীনজ্ঞান, বলের চরণে
না লুটিতে। বীর্য দেহো চিত্তেরে একাকী
প্রত্যহের তুচ্ছতার উধ্বে দিতে রাখি।

বীর্য দেহো তোমার চরণে পাতি শির অহর্নিশি আপনারে রাখিবারে স্থির। সংসারে মােরে রাখিয়াছ যেই ঘরে
সেই ঘরে রব সকল ছু:খ ভূলিয়া।
করুণা করিয়া নিশিদিন নিজ করে
রেখে দিয়ো ভার একটি ছুয়ার পূলিয়া।

মোর সব কাজে মোর সব অবসরে
সে তুয়ার রবে ভোমারি প্রবেশ- ৬রে,
সেপা হতে বায় বহিবে কদয- পরে
চরণ হইতে তব পদরক্ত ভুলিয়া।
সে তুয়ার পুলি আসিবে ভূমি এ ঘরে,
আমি বাহিরিব সে তুয়ারখানি পুলিয়া।

আর যাত মুখ পাই বা না পাই ৩৭ এক মুখ শুগু মোর ৩রে ভূমি বাখিয়ো। সে মুখ কেবল ভোমার আমার, প্রভু— সে মুখের পৈরে ভূমি জাগ্রত পাকিয়ো।

ভাচারে না ঢাকে আর যত সুপগুলি,
সংসার যেন ভাচাতে না দেয় প্লি,
সব কোলাচল হতে ভারে তুমি তুলি
যতন করিয়া আপন অক্ষে ঢাকিয়ো।
আর যত সুপে ভকক ভিক্ষাকৃলি
সেই এক সুপ নোর ভরে তুমি রাখিয়ো।

> ত্থ পশে যবে মর্মের মাঝখানে তোমার লিখন-স্বাক্ষর যেন আনে, রুক্ষ বচন যতই আঘাত হানে সকল আঘাতে তব স্থর উঠে জাগিয়া। শত বিশ্বাস ভেঙে যদি যায় প্রাণে এক বিশ্বাসে রহে যেন মন লাগিয়া।

Barcode: 4990010203066
Title - Naibedya (1921)
Author - Tagore, Rabindranath
Language - bengali
Pages - 119
Publication Year - 1921
Barcode EAN.UCC-13

